Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 3

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

20 जमादी अव्वल 1441 हिजरी कमरी 16 सुलह 1398 हिजरी शमसी 16 जनवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

क़ुरआन करीम को देखकर हैरत होती है कि इसी उम्मी ने किताब और हिक्मत ही नहीं बतलाई बल्कि नफ़स की पवित्रता की राहों से परिचित किया और यहां तक कि اَيَّدَهُمۡ بِرُوۡحٍ مِّنۡهُ (अल-मुजादल :23) तक पहुंचा दिया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रसूल उम्मी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुपमीय स्थान

चूँकि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त दुनिया के इन्सानों की रुहानी तर्बीयत के लिए आए थे इस लिए यह रंग हुज़ूर अलैहिस्सलाम में बदरजा कमाल मौजूद था और यही वह स्तर है जिस पर क़ुरआन करीम ने विभिन्न स्थानों पर हुज़ूर के बारे में गवाही दी है और अल्लाह तआला की विशेषताओं के मुक़ाबला में और इसी रंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विशेषताओं का वर्णन फ़रमाया है।

مَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ (अल- अंबिया 108) ऐसा ही फरमाया قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَيۡكُمۡ جَمِيۡعًا (अलाआराफ़:159) क़ुरआन शरीफ़ के दूसरे स्थानों पर विचार करने से पता लगता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने उम्मी (अनपढ़) फ़रमाया है इस लिए कि अल्लाह तआला के सिवा आप का कोई उस्ताद ना था मगर इस के बावजूद के कि आप उम्मी थे। हुज़ूर के धर्म में उम्मीय्यीन औसत दर्जा के आदमियों के इलावा उच्च दर्जा के फिलासफरों और आलिमों को भी कर दिया जिस से قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَيۡكُمۡ جَمِيۡعًا के अर्थ अत्यन्त ही सूक्ष्म तौर पर समझ में आ सकते हैं। जमीअन के दो अर्थ हैं। प्रथम समस्त मानव जाति या समस्त सृष्टि। द्वितीय समस्त वर्ग के आदमियों के लिए अर्थात मध्य ,निम्न और उच्च दर्जा के फिलासफरों और हर एक किस्म की अक़ल रखने वालों के लिए। अत: हर अक़ल और हर मिज़ाज का आदमी मुझ से सम्बन्ध कर सकता है।

क़ुरआन करीम को देखकर हैरत होती है कि इसी उम्मी ने किताब और हिक्मत ही नहीं बतलाई बल्कि नफ़स की पवित्रता की राहों से परिचित किया और यहां तक कि اَيَّدَهُمۡ بِرُوۡحٍ مِّنۡهُ (अल-मुजादल :23) तक पहुंचा दिया। देखो और ध्यान पूर्वक दृष्टि से देखो कि क़ुरआन शरीफ़ हर तरह के अभिलाषी को अपने गन्तव्य तक पहुँचाता और हर सच्चाई और सदाक़त के प्यासे को तृप्त करता है लेकिन ख़्याल तो करो कि यह हिक्मत और मार्फ़त का दरिया सदाक़त और नूर का चश्मा किस पर नाज़िल हुआ? इसी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो एक तरफ़ तो उम्मी कहलाता है और दूसरी तरफ़ वह कमाल और हक़ायक़ उस के मुँह से निकल रहे हैं कि दुनिया की तारीख़ में इस की तुलना पाई नहीं जाती। यह अल्लाह तआला का कमाल फ़ज़ल है कि ताकि लोग महसूस करें कि अल्लाह तआला के सम्बन्ध इन्सान के साथ कहाँ तक हो सकते हैं? हमारा उद्देश्य इस वर्णन से यह है कि अल्लाह तआला के सम्बन्ध बहुत नाज़ुक दर्जा तक पहुंच जाते हैं। मुक़र्रबीन से उलूहियत का ऐसा सम्बन्ध हो जाता है कि मख़लूक़ परस्त इन्सान उनको ख़ुदा समझ लेते हैं। ये बिलकुल दरुस्त और सही है कि

मर्दान ख़ुदा , ख़ुदा न बाशनद
लेकिन ज़ ख़ुदा जुदा न बाशनद

ख़ुदा तआला उनके साथ ऐसा होता है कि बग़ैर दुआओं के भी उनकी सहायता करता है। मुद्दा यह है कि इन्सान का आला दर्जा वही नफ़स मुतमइन्ना है जिस पर मैंने बात शुरू की है। इसी हालत में और समस्त हालतों से ऐसे लवाज़म हो जाते हैं कि आम सम्बन्ध इलाही से बढ़कर ख़ास सम्बन्ध हो जाता है जो ज़मीनी और सतही नहीं होता बल्कि अलवी और आकाशीय सम्बन्ध होता है। अभिप्राय यह है कि यह सन्तोष जिसको सफलता और दृढ़ता भी कहते हैं और اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ (अलफ़ातिहा:6) में भी इसी की तरफ़ इशारा है और इसी राह की दुआ शिक्षा की गई है और यह दृढ़ता की राह उन लोगों की राह है जो مُنۡعَمۡ عَلَيۡهِمۡ हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्लों तथा इनामों के पात्र हैं। مُنۡعَمۡ عَلَيۡهِمۡ की राह को खासतौर पर वर्णन करने से यह अभिप्राय था कि दृढ़ता की राहें विभिन्न हैं मगर वह इस्तिक़ामत जो कामयाबी और फ़लाह की राहों का नाम है। वह अनबया अलैहिमुस्सलाम की राहें हैं। इस में एक और इशारा मालूम होता है कि اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ में दुआ इन्सान की ज़बान, हृदय और कर्म से होती है और जब इन्सान ख़ुदा से नेक होने की दुआ करे तो उसे शर्म आती है मगर यही एक दुआ है जो इन मुश्किलों को दूर कर देती है। اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ (अलफ़ातिह :5) तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ से ही सहायता चाहते हैं।

दुआ करने से पहले समस्त क़ुवा का ख़र्च करना ज़रूरी है

اِيَّاكَ نَعۡبُدُ पर اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ को प्राथमिकता इस लिए है कि इन्सान दुआ के वक़्त समस्त क़ुवा से काम लेकर ख़ुदा तआला की तरफ़ आता है। यह एक बे-अदबी और गुस्ताख़ी है कि क़ुवा से काम ना लेकर और क़ानून क़ुदरत के नियमों से काम ना लेकर आए। जैसे किसान अगर बीज लगाने करने से पहले ही यह दुआ करे कि इलाही ! इस खेत को हरा-भरा कर और फल फूल ला, तो यह शोख़ी और ठट्ठा है। इसी को ख़ुदा की परीक्षा और आज़माईश कहते हैं जिससे मना किया है और कहा गया है कि ख़ुदा को मत आज़माओ। जैसा कि मसीह अलैहिस्सलाम के माइदा मांगने के क़िस्सा में इस बात को स्पष्टता से बयान किया गया है। इस पर विचार करो और सोचो।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 104 से 106)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति बदरी सहाबा हज़रत यज़ीद बिन साबित, हज़रत मुअव्विज़ बिन अमरो बिन जमूह और हज़रत बिशर बिन बरा रज़ी अल्लाह अन्हुम की सीरत मुबारका का वर्णन।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उच्च आदर्श :वफ़ात पाने वालों का सम्मान

लंगड़ाहट के बावजूद हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि का जंग में शामिल होने का जोश और आपके शहीद होने का ज़िक्र

जंग उहद में ऊँघ नाज़िल होने की घटना और अमन नुअसा की तफ़सीर

एक यहूदी औरत की तरफ़ से रसूल करीम सल्ललल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़हर मिला गोशत खिलाने और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस के बाद भी भरपूर ज़िन्दगी गुज़ारने का वर्णन।

मुकर्रम नसीर अहमद साहिब पुत्र मुकर्रम अली मुहम्मद साहिब आफ़ राजनपुर और मुकर्रम अता उल-करीम मुबश्शिर साहिब पुत्र मियां अल्लाह दत्ता साहिब किरतू ज़िला शेख़ूपूरा हाल कैनेडा की वफ़ात। मरहूमीन का ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 नवम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत यज़ीद बिन साबित रज़ि एक बदरी सहाबी थे उनका सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू मालिक बिन नज्जार से था। हज़रत यज़ीद रज़ि के पिता का नाम साबित बिन ज़हहाक और माता का नाम नवार बिन्त मालिक था। हज़रत यज़ीद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि के बड़े भाई थे।

(असदुलग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 2 पृष्ठ 137 ''ज़ैद बिन साबित''दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

(असदुलग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 4 पृष्ठ 677 ''यज़ीद बिन साबित''दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

और हज़रत यज़ीद बिन साबित ने दुबय्यह बिन्त साबित से शादी की थी

(अत्तबकातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 254 ''साबित बिन ख़ालिद''दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत1996 ई)

और यह भी उनके बारे में आता है कि हज़रत यज़ीद बिन साबित रज़ि जंग बदर और उहद दोनों में शामिल हुए थे।

हज़रत यज़ीद बिन साबित रज़ि की शहादत12 हिज्री में हज़रत अबू बकर रज़ि के दौर खिलाफ़त में जंग यमामा के दिन हुई जबकि एक दूसरे कथन के अनुसार जंग यमामा के दिन उन्हें एक तीर लगा था और वापसी पर रास्ता में उनकी वफ़ात हुई थी।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफ़ितल असहाब भाग 4 पृष्ठ 132 ''यज़ीद बिन साबित''दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2002 ई) (किताबुल सकात ले इब्न हबान भाग 1 पृष्ठ 468 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1998 ई)

हज़रत यज़ीद बिन साबित रज़ि वर्णन करते हैं कि वे लोग नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बैठे हुए थे कि एक जनाज़ा ज़ाहिर हुआ। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हो गए और जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे वे भी खड़े हो गए। वे सब खड़े रहे यहां तक कि वह जनाज़ा गुज़र गया।

(सुनन अन्निसाई किताबुल जनायज़ बबुल अमर लिल जनाज़ह हदीस 1920)

यही घटना एक और रिवायत में विस्तार के साथ इस तरह वर्णन हुई है।

हज़रत यज़ीद बिन साबित रज़ि से रिवायत है कि वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास सहाबा के साथ बैठे हुए थे कि एक जनाज़ा ज़ाहिर हुआ। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे देखा तो आप भागी से खड़े हुए और आप के सहाबा भी तेज़ी से खड़े हो गए। वे तब तक खड़े रहे जब तक जनाज़ा गुज़र ना गया। हज़रत यज़ीद कहते हैं कि अल्लाह की क़सम मैं नहीं समझता कि आप किसी तकलीफ़ या जगह की तंगी की वजह से खड़े हुए थे और मेरा ख़्याल है कि वह किसी यहूदी मर्द या औरत का जनाज़ा था और हमने आप से आप के खड़े होने की वजह भी ना पूछी।

(अल-मुसनफ़ ले इब्न अबी शेबह अनुवाद भाग 3 पृष्ठ 732 किताबुल जनायज़ बाब मन काला युक़मु लिल-जनाइज़ इज़ा मर्रत हदीस 12030 प्रकाशन रहमानिया लाहौर)

फिर हज़रत यज़ीद बिन साबित रज़ि से एक और रिवायत है कि वे लोग एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ निकले। यह सुनन निसाई की है। हज़रत यज़ीद बिन साबित रज़ि कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ निकले। आपने एक नई क़ब्र देखी (यह एक अन्य घटना है। एक दूसरी घटना वर्णन हो रही है कहते हैं हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ निकले । आप ने एक नई क़ब्र देखी तो फ़रमाया ये किया है? लोगों ने कहा कि यह अमुक क़बीले की लौंडी की क़ब्र है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे पहचान लिया। सहाब रज़ि ने निवेदन की कि वह दोपहर के वक़्त फ़ौत हुई थी और आप उस वक़्त आराम फ़र्मा रहे थे। हमने आप को इस वजह से उठाना पसंद नहीं किया कि आप आराम कर रहे हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए और अपने पीछे लोगों की सफ़ बंदी की और आप ने इस पर चार तक्बीरें कहीं अर्थात इस क़ब्र के ऊपर ही आप ने सफ़ें बनवा के जनाज़ा पढ़ा। फिर फ़रमाया कि जब तक मैं तुम्हारे बीच हूँ जो भी तुम में से फ़ौत हो उस की ख़बर मुझे ज़रूर दो क्योंकि मेरी दुआ उस के लिए रहमत है।

(सुनन अन्निसाई किताबुल जनायज़ बाबु अस्सलातो अला कबरे हदीस 2022)

इसी तरह यह रिवायत मुस्लिम और सुनन अबू दाऊद और इब्न माजा में भी है। इब्न माजा में इस तरह विस्तार से वर्णन हुई है कि हज़रत यज़ीद बिन साबित रज़ि ने वर्णन किया और वह ज़ैद से बड़े थे कि हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ निकले। जब आप जन्नतुल-बक़ी में पहुंचे तो वहां एक नई क़ब्र थी। आप ने इस के बारे में पूछा। उन्होंने निवेदन किया कि यह अमुक औरत है। रावी कहते हैं कि आपने उस को पहचान लिया और फ़रमाया तुमने मुझे उस के बारे में क्यों ख़बर ना दी। उन्होंने निवेदन किया कि आप दोपहर को आराम फ़र्मा रहे थे। आप रोज़े से भी थे। हमने पसंद ना किया कि आपको तकलीफ़ दें। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसा काम ना करो जो मैं नहीं जानता। अर्थात मैंने तो कभी नहीं ऐसा कहा। तुम में से जो कोई भी फ़ौत हो जब तक मैं तुम्हारे बीच हूँ मुझे उस के बारे में ज़रूर इत्तिला किया करो क्योंकि इस पर मेरी दुआ उस के लिए रहमत का कारण है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और हमने आप के पीछे सफ़ बनाई और आप ने इस पर चार तक्बीरें पढ़ीं।

(सुनन इब्न माजा किताबुल जनायज़ बब मा जाअ फी सलातिल कब्र हदीस1528)

सही बुख़ारी की एक रिवायत है जो हज़रत अबूहुरैरा रज़ि से है कि एक काली औरत के बारे में रिवायत है। यह क़ब्र पर जनाज़ा पढ़ने के बारे में है जिसमें यह वर्णन है कि वह मस्जिद नबवी में झाड़ू दिया करती थी। औरत मस्जिद नबवी में झाड़ू दिया करती थी वह फ़ौत हो गई। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उसे कुछ रोज़ ना देखा तो आप ने इस औरत के बारे में पूछा। लोगों ने बताया

कि वह फ़ौत हो गई है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फिर क्या तुमने मुझे उस की इत्तिला नहीं देनी थी। इस औरत की क़ब्र का पता बताओ। अत: आप उस औरत की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और इस का जनाज़ा पढ़ा

(सही अल-बुख़ारी किताबुस्सलात बाब कंसुल मस्जिद वल-तकाज़ अलख़रक... हदीस 458)

(सही अल-बुख़ारी किताबुस्सलात बाब लेख़दम लिल-मस्जिद हदीस 460)

सुनन इब्न माजा की शरह एनुल का लेखक लिखता है कि यह एक काले रंग की औरत थी जिसका नाम इमाम बीहक़ी ने उम्मे मिहजन वर्णन किया है और इब्न मनदह ने इस का नाम ख़रकाअ वर्णन किया है और सहाबियात में से इस को गिना है और यह भी मुम्किन है कि ख़रकाअ इस औरत का नाम हो और उम्मे मिहजन उस की कुनिय्यत हो। यानी दोनों नाम सही हैं।

(इंजाज़ुल हाजत शरह सुनन इब्न माज भाग 4 पृष्ठ332 किताबुल जनायज़,बाब मा जाआ फ़ी सलातिल क़बर हदीस 1527 दारुन्नूर इस्लामाबाद 2011ई)

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत मुअव्विज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि। हज़रत मुअव्विज़ का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू जुशम से था

(अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 470 अल-अनसार वमन मअहुम मिन बनी जशम, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत मुअव्विज़ रज़ि के पिता का नाम अमरो बिन जमूह और उनकी माता का नाम हिंद बिंत अमरो था। हज़रत मुअव्विज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि अपने दो भाईयों हज़रत मुआज़ रज़ि और हज़रत ख़ल्लाद रज़ि के साथ जंग बदर में शामिल हुए थे उस के इलावा यह जंग उहद में भी शामिल हुए थे।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 426-427 और अख़ूहो मुअव्विज़ बिन अमरो। दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2012 ई)

हज़रत मुअव्विज़ बिन अमको के पिता वही अमरो बिन जमूह हैं जिनको उनके बेटों ने उनकी लंगड़ाहट की वजह से पांव की तकलीफ़ की वजह से बदर में शामिल नहीं होने दिया था। इस का ज़िक्र मैं पहले भी एक बार ख़ुत्बे में कर चुका हूँ। संक्षेप में बता दूं कि जब उहद का मौक़ा आया तो हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि ने अपने बेटों से कहा कि बदर के मौक़े पर तुमने मुझे जंग पर जाने नहीं दिया था लेकिन अब मैं ज़रूर जाऊँगा । उहद की जंग में तुम मुझे रोक नहीं सकते। उनके बेटों ने बहुत कहा कि आप की टांग ख़राब है। आप पर तो जंग ज़रूरी भी नहीं है। ऐसे हालात में फ़र्ज़ नहीं है लेकिन हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि नहीं माने। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और निवेदन की कि हे रसूलुल्लाह!मेरे बेटे मेरे पांव की तकलीफ़ की वजह से जंग में मुझे शामिल होने से रोक रहे हैं लेकिन मैं आप के साथ जिहाद में शामिल होना चाहता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यही फ़रमाया कि जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है तुम्हें अल्लाह तआला ने माज़ूर क़रार दिया है और तुम पर इस वजह से जिहाद फ़र्ज़ नहीं है लेकिन फिर आप ने उन्हें उनका वह जोश देख के, शौक़ देख के इजाज़त भी दे दी। हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि ने अपना जंग का हथियार तथा सामान लिया और यह कहते हुए चले गए कि हे अल्लाह मुझे शहादत प्रदान फ़र्मा और मुझे असफल तथा नाकाम अपने घर वालों की तरफ़ ना लौटाना और फिर वास्तव में उनकी यह इच्छा पूरी हुई और वह उहद के मैदान में शहीद हुए। उनकी शहादत के बाद उनकी बीवी हज़रत हिंद ने उन्हें और अपने भाई अब्दुल्लाह बिन अमरो को भी एक सवारी पर रखा और इन दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसके कब्ज़ा क़ुदरत में मेरी जान है कि मैं ने अमरो को जन्नत में अपने लंगड़े पन के साथ चलते हुए देखा है

(असदुल ग़ाब: भाग 4 पृष्ठ 195-196 अमरो बिन अलजमूह,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

फिर अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम हज़रत बिशर बिन बरा बिन मअरूर रज़ि है। हज़रत बिशर का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू उबीद बिन अदी से था और दूसरे कथन के अनुसार बनू सलमा से था।

(अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 471 बाब अल-अनसारो वमन मअहुम, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

(असदुलग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: ले इब्न असीर भाग 1पृष्ठ 380 बिशर बिन अल्बराअ ,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

दो विभिन्न रिवायतें वर्णन की जाती हैं

हज़रत बिशर रज़ि के पिता का नाम हज़रत बरा बिन मअरूर और माता का नाम खुलेदह बिन्त कैस था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 291 बिशर बिन अलबराय रज़ि,दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी 1996 ई)

हज़रत बिशर के पिता हज़रत बरा बिन मअरूर इन बारह (12)नक़ीबों में से थे जो मुक़र्रर किए गए थे और क़बीला बनू सलमा के नक़ीब थे। हज़रत बरा रज़ि हिजरत से एक महीना पहले हालत सफ़र में फ़ौत हो गए थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिज्रत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो आप ने उनकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले जाकर चार तकबीरें अदा फ़रमाईं।

(असदुलग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: ले इब्न असीर भाग 1 पृष्ठ 365-366 अलबरा इब्न मअरूर,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

हज़रत बिशर रज़ि अपने पिता के साथ बैअत उक़बा सानिया में शामिल हुए और हज़रत बिशर बिन बराअ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माहिर तीर अनदाज़ सहाबह रज़ि में से थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिशर रज़ि और हज़रत वाक़िद बिन अब्दुल्लाह रज़ि जिन्होंने मक्का से मदीना की तरफ़ हिज्रत की थी, उन्हें आपस में भाई-भाई बनाया। हज़रत बिशर जंग बदर, उहद ,ख़ंदक़ ,हुदैबिया और ख़ैबर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलत हुए।

(अलअसाब: फ़ी तमीइज़स्सहाब: भाग 1,पृष्ठ 426 बिशर बिन अलबराय रज़ि,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 291 बिशर बिन अलबराय रज़ि,दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी1996 ई)

अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह रज़ि रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बनू नज़ला (कुछ रिवायत में बनू सलमा लिखा है कि)तुम्हारा सरदार कौन है? उन्होंने कहा कि जद्दे बिन केस। आपने फ़रमाया कि उसे किस वजह से सरदार मानते हो? उन्होंने निवेदन किया कि वह हमसे ज़्यादा मालदार है। बड़ा अमीर आदमी है। बड़ा आदमी है इसलिए हमने उस को सरदार बना लिया है लेकिन साथ यह भी कहा कि हम केवल कंजूसी की वजह से उसे बुरा समझते हैं।वह बड़ा बख़ील है ,कंजूस है और इस की यह बात हमें पसंद नहीं है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कंजूसी से ज़्यादा बड़ी बीमारी कौन सी है ?यह कंजूस होना तो बहुत बड़ी बीमारी है। वह तुम्हारा सरदार नहीं है और इस वजह से वह तुम्हारा सरदार नहीं हो सकता। उन्होंने निवेदन किया कि हे रसूल्ललाह फिर हमारा सरदार कौन है आप ही बता दें? आपने फ़रमाया कि बिशर बिन बरा बिन मअरूर तुम्हारा सरदार है जिन सहाबी रज़ि का ज़िक्र हो रहा है। उनके बारे में फ़रमाया कि यही तुम्हारा सरदार है और एक दूसरी रिवायत में ये शब्द हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा सरदार सफ़ैद रंग वाला, घुंघराले बालों वाला बिशर बिन बरा बिन मअरूर है

(अलअसाब: फ़ी तमीईज़ सहाब भाग 1,पृष्ठ 426-427 बिशर बिन अलबराय रज़ि,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 291 बिशर बिन अलबराय रज़ि,दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी 1996 ई)

हज़रत बिशर बिन बराय रज़ि ने हज़रत कुबैस: बिन्त सफी से शादी की जिससे उनके हाँ एक बेटी पैदा हुई जिसका नाम आलीया था। हज़रत कुबैस: ने इस्लाम क़बूल किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत भी की।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 8 पृष्ठ 435 कुबैस: बिन्ते सफी, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि से मर्वी है कि यहूद औस और ख़ज़रज के मुक़ाबले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मबऊस होने से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्ते से फ़तह की दुआ मांगा करते थे। आपस में लड़ते थे तो यह दुआ मांगा करते थे। यह नबी जिसकी पेशगोई है मबऊस होने वाला है इस के नाम पर हमें फ़तह प्रदान कर। अल्लाह तआला से मांगते थे लेकिन जब अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अरब में से मबऊस फ़रमाया तो उन्ही लोगों ने आपका इनकार किया और जो बात वह कहा करते थे इस से इंकारी हो गए। यही तरीक़ा है हमेशा से इनकार करने वालों का। हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि और हज़रत बिशर बिन बराय रज़ि और दाऊद बिन सलमह रज़ि ने उनसे एक दिन कहा कि हे यहूद के गिरोह !अल्लाह से डरो और इस्लाम

क़बूल कर लो। पहले तो तुम हम पर मुहम्मद नाम के नबी के ज़हूर के ज़रीया फ़तह मांगते थे। यह कहा करते थे कि यह नबी मबऊस होगा जिसका नाम मोहम्मद होगा और इस की वजह से फ़तह की दुआ किया करते थे और हम शिर्क करने वाले थे। हज़रत बिशर बिन बराय रज़ि ने कहा कि हम तो उन लोगों में शामिल थे जो शिर्क करते थे और तुम हमें ये बातें बताया करते थे और तुम हमें ये बताते थे कि वह नबी मबऊस होने वाला है। अब वक़्त आ गया है कि वह मबऊस होगा और हमें उस की निशानियां बताया करते थे कि ये ये चिन्ह होंगे। अब मबऊस हो गया है तो अब इस नबी पर ईमान क्यों नहीं लाते। सल्लाम बिन मिशकम यहूदी ने जो क़बीला बनू नज़ीर में से था (सल्लाम बिन मिशकम यहूद के क़बीला बनू नज़ीर का सरदार और उनके खज़ाने का निगरान भी होता था। यह उस औरत ज़ैनब बिंत हारिस का ख़ावंद था जिसने जंग ख़ैबर में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़हर मिला गोश्त दिया था। बहरहाल उसने जवाब दिया कि वह नबी हमारे पास वह नहीं लेकर आया जिसे हम पहचानते हैं और ना आप वह नबी हैं जिनका हमने तुमसे ज़िक्र किया था। सारी निशानियां पूरी हो गईं जो यह कहते थे। कहते नहीं हम पर वह लेकर नहीं आया जो हम पहचानते हैं। सारी निशानियां पूरी नहीं हुईं इसलिए हम नहीं मानेंगे। तब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

وَ لَمَّا جَآءَهُمۡ كِتٰبٌ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمۡ ۙ وَ كَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ يَسۡتَفۡتِحُوۡنَ عَلَى الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمۡ مَّا عَرَفُوۡا كَفَرُوۡا بِهٖ ۚ فَلَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ (अलबकर: 90)

अर्थात और जब अल्लाह की तरफ़ से उनके पास एक ऐसी किताब आई जो इस (शिक्षा)की जो उनके पास थी तसदीक़ कर रही थी जबकि हाल यह था कि इस से पहले वे उन लोगों के ख़िलाफ़ जिन्होंने कुफ्र किया (अल्लाह से मदद मांगा करते थे। अत: जब वह उनके पास आ गया जिसे उन्होंने पहचान लिया तो (फिर भी इस का इनकार कर दिया। अत: काफ़िरों पर अल्लाह की लानत हो।

(अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 381 मा नज़ल मिनल बकर फिल मुनाफ़कीन व यहूद, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

(अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 512 जंग स्वेक, पृष्ठ 698 किसस अश्शाम अल-मसमूम, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

(अलरोज़ अल-अनफ़ फ़ी शरह अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्न हश्शाम भाग 2 पृष्ठ 325 बाब काहिना क़ुरैश, प्रकाशन इब्न तीमीयह 1990ई)

हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि वर्णन करते हैं कि जब जंग उहद का रुख पल्टा तो मैंने अपने आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब पाया। जब हम सब बदहवास और भयभीत थे और हम पर नींद नाज़िल कर दी गई। ऐसी हालत थी कि लगता था कि ऊँघ की हालत हम पर छा गई है। अत: हम में से कोई शख़्स ऐसा नहीं था जिसकी ठोढ़ी उस के सीने पर ना हो। अर्थात नींद और ग़नूदगी की हालत में सिर नीचे ढलक गए थे। कहते हैं कि अल्लाह की क़सम !मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मुअत्तब बिन कुशीर की आवाज़ ख़्वाब में सुनाई दे रही है। वह कह रहा था कि अगर हमें फ़ैसले का अधिकार होता तो हम कभी यहां इस तरह क़तल ना किए जाते। मुअत्तब बिन कुशीर अन्सारी सहाबी थे और बैअत उक़बा ,जंग बदर और उहद में शामिल हुए थे। मैंने उनके इस वाक्य को याद कर लिया जब इस तरह ख़्वाब की हालत में देखा था। इस अवसर के बारे में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

ثُمَّ اَنۡزَلَ عَلَيۡكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ الۡغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغۡشٰى طَآئِفَةً مِّنۡكُمۡ ۙ وَ طَآئِفَةٌ قَدۡ اَهَمَّتۡهُمۡ اَنۡفُسُهُمۡ يَظُنُّوۡنَ بِاللّٰهِ غَيۡرَ الۡحَقِّ ظَنَّ الۡجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوۡلُوۡنَ هَلۡ لَّنَا مِنَ الۡاَمۡرِ مِنۡ شَىۡءٍ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡاَمۡرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ

(आले- इमरान155)

कि फिर उसने तुम पर ग़म के बाद तसकीन बख़शने के लिए ऊँघ उतारी जो तुम में से एक गिरोह को ढाँप रही थी। जबकि एक वह गिरोह था कि जिन्हें उनकी जानों ने फ़िक्रमंद कर रखा था वह अल्लाह के बारे में जाहिलियत के गुमानों की तरह नाहक़ गुमान कर रहे थे। वह कह रहे थे कि क्या अहम फ़ैसलों में हमारा भी कोई अमल दख़ल है ?तू कह दे कि यक़ीनन फैसले का इख़तियार केवल अल्लाह ही को है।

हज़रत कअब बिन अमरो अनसारी रज़ि ने वर्णन किया है कि जंग उहद के दिन एक मौक़ा पर में अपनी क़ौम के 14आदमियों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास था इस पर हम पर ऊँघ छाई थी। जो बतौर अमन के थी अर्थात बड़ी सुकून वाली ऊँघ थी। जंगी हालत थी लेकिन वह ऐसी ऊँघ थी जो हमें सुकून दे रही थी। कोई शख़्स ऐसा नहीं था जिसके सीने से धूँकनी की तरह ख़र्राटों की आवाज़ ना निकल रही हो। कई बार ऐसी गहरी हालत भी हो गई थी। कहते हैं मैं ने देखा कि बिशर बिन बरआ बिन मारूर जिन सहाबी का ज़िक्र हो रहा है कि उनके हाथ से तलवार छूट कर गिर गई और उन्हें तलवार के गिरने का एहसास भी ना हुआ हालाँकि मुशरिकीन हम पर चढ़े आ रहे थे।

(अस्सीरतुल हलिबया भाग 2 पृष्ठ 310 बाब ज़िक्र मग़ाज़ी,जंग उहद,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 4 पृष्ठ 432 मअतब बिन कशीर रज़ि ,दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई)

बहरहाल हो सकता है कि यह उनको महसूस हुआ हो कि गिर गई क्योंकि उस वक़्त ऐसी हालत में नींद तो थी। लेकिन उनके हाथों में जो हथियार थे मज़बूती से क़ायम होते थे या गिरने लगते थे तो झटका लगता था ।बहरहाल यहां लफ़्ज़ नुआस प्रयोग हुआ है इस की जो वज़ाहत, तशरीह, है वह अपने एक दरस में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रज़ि ने बड़ी विस्तार से फ़रमाई थी कि

اَمَنَةً نُّعَاسًا विभिन्न पहलूओं से इस के जो अनुवाद हैं उनका सारांक्षत: यह अर्थ बनेगा कि ग़म के बाद तुम पर ऐसा सुकून नाज़िल फ़रमाया जिसे नींद कह सकते हैं या ऐसी ऊँघ अता की जो अमन पर आधारित थी या वह अमन दिया जो नींद का सा असर रखता था या नींद में शामिल था

यह اَمَنَةً نُّعَاسًا का यह अर्थ है। ऊँघ वक़्ती तौर पर यूं सिर झुका कर ग़ोता खा जाने को भी कहते हैं लेकिन यहां नुआसा का अर्थ इस किस्म की ऊँघ नहीं है बल्कि वह अवस्था है जो बेदारी और नींद के बीच की अवस्था होती है। सोने से पहले एक बीच की ऐसी मंज़िल आती है जहां सारे अंगों को एक सुकून मिल जाता है और वही गहरा सुकून है अगर वह सुकून इसी तरह जारी रहे तो फिर नींद में तबदील हो जाता है। ऐसी हालत में इन्सान अगर चल रहा है तो गिरेगा नहीं। गिरने से पहले उसे झटका लग जाता है और वो जान लेता है कि मैं किस कैफ़ीयत में था। लेकिन अगर नींद आ जाए तो फिर अपने आसाब पर, अपने अंगों पर कोई इख़तियार नहीं रहता। बहरहाल हो सकता है बिशर बिन बराअ रज़ि को इस हालत में इस तरह की गहरी नींद भी आ गई हो। लेकिन बावजूद जंग की हालत के वह थी सुकून की कैफ़ीयत और इन्सान गिर जाता है और अगर उस को सही भी माना जाए तो इसी वजह से उनके हाथ ज़रा ढीले हुए तो तलवार गिर गई। बहरहाल ये हालत ऐसी होती है जिसमें फ़ौरी एहसास भी हो जाता है कि मैं गहरी नींद में जा रहा हूँ और फिर इन्सान झटके से जाग जाता है। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने तुम्हें एक ऐसी सुकून की हालत प्रदान की जो नींद से मिलती जुलती थी मगर नींद की तरह इतनी गहरी नहीं थी कि तुम्हें अपने ऊपर अपने अंगों पर कोई इख़तियार नहीं रहे। वह शान्ति तो प्रदान कर रही थी मगर तुम्हें बेकार नहीं कर रही थी।

हज़रत अबू तलहा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो कहते हैं और यह बुख़ारी की हदीस में है कि उहद के दिन ठीक जंग में हमको ऊँघ ने आ दबाया और यह वह ऊँघ है जिसका ज़िक्र पहले गुज़र चुका है। हज़रत तलहा रज़ि कहते हैं कि तलवार मेरे हाथ से गिरने को होती थी। मैं थाम लेता था। अत: यह हदीस बता रही है कि ऐसी नींद की कैफ़ीयत नहीं थी कि हाथों से चीज़ें नीचे जा पढ़ें या चलते चलते हम गिर जाएं। सन्तोष था, शान्ति थी मगर फिर भी एक हद तक हमें अपने आज़ा पर इख़तियार हासिल था। फिर गिरने को होती थी तो फिर थाम लेते थे। अर्थात यह ऊँघ का एक हिस्सा कोई अचानक यूँही नहीं आया बल्कि यह एक अवस्था थी जो उन लोगों पर कुछ समय चलती रही।

तिरमिज़ी अबवाबुल तफ़सीर में हज़रत अबू तलहा रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि जंग उहद के दिन मैं सिर उठा कर देखने लगा तो हर आदमी ऊँघते ऊँघते अपनी ढाल के नीचे झुक रहा था। जागने की वजह से या थकावट की वजह से उन सहाब रज़ि की बहुत बुरी हालत हो गई थी और ऐसी हालत में अल्लाह तआला की तरफ़ से यह सुकून की अवस्था मिल रही थी। कहते हैं अर्थात ऐसा ही नज़ारा हुआ कि जो आम था। कोई संयोग से एक थके हुए मुजाहिद के ऊपर छाने वाली कैफ़ीयत नहीं थी। बल्कि हज़रत ख़लीफ़ा राबे ने लिखा है कि समस्त मुजाहिदीन जो हज़रत अक़दस मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग में दुश्मन के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे इन सब पर अचानक मानो आसमान से एक चीज़ उत्तरी है और इस हालत ने इस को ढाँप लिया। इस वक़्त उनको उस चीज़ की सुकून की अपने अंगों को Refresh करने की, उनको ताज़ा-दम करने

की बहुत ज़रूरत थी और सोने का वक़्त कोई नहीं था और जब ऐसी हालत हो जब ऐसी थकावट की हालत हो तो ऐसी हालत इन्सानों पर छा जाती है। बहरहाल सारी क़ौम एक साथ एक ऐसी नींद की हालत में चली जाए जबकि लड़ाई हो रही हो और दुश्मन से सख़्त ख़तरा भी दरपेश हो यह चमत्कार है। एक मोजिज़ा है। यह कोई संयोग नहीं है। कुछ लोगों के साथ हो जाता है यह लेकिन यह कोई संयोग की घटना नहीं एक मोजिज़ा है और यह अल्लाह तआला की तरफ़ से एक विशेष सुकून की कैफ़ीयत उनको उस वक़्त प्रादन की गई थी

(उद्धरित दर्सुल क़ुरआन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह17 फरवरी 1994 ई)

हज़रत बिशर रज़ि ने जंग ख़ैबर के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इस ज़हर मिले बकरी का गोश्त खाया जो एक यहूदी औरत ने तोहफा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पेश किया था। जब हज़रत बिशर ने अपना लुक़मा निगला तो इस जगह से अभी हटे भी ना थे कि उनका रंग तबदील हो कर तयलसान यह कपड़ा है जिसमें काला रंग ज़्यादा ग़ालिब होता है ,इस की तरह हो गया। दर्द से एक साल तक यह अवस्था रही कि बिना सहारे के करवट तक ना बदल सकते थे। फिर इसी हालत में आप रज़ि की वफ़ात हो गई और यह भी कहा जाता है कि वह अपनी जगह से हटे भी नहीं थे, ज़हर इतना ज़्यादा था कि वहीं खाने के थोड़ी देर बाद ही उनकी वफ़ात हो गई।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 291 बिशर बिन अलबराय रज़ि,दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी 1996 ई)

हज़रत बिशर बिन बराय रज़ि ने जब वफ़ात पाई तो उनकी माता को बहुत दुख हुआ। उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिशर की वफ़ात बनू सलमा को हलाक कर देगी और बनू सलमा में से मरने वाले तो मरते ही रहेंगे। क्या मुर्दे एक दूसरे को पहचान लेंगे। उन्होंने जो यह हरकत की है तो यह हरकत करने वाले तो हलाक होंगे, लेकिन क्या मुर्दे एक दूसरे को पहचान लेंगे ?क्या बिशर की तरफ़ सलाम पहुंचाया जा सकता है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ हे बिशर की मां उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है जैसे परिंदे दरख़्तों पर एक दूसरे को पहचान लेते हैं वैसे ही जन्नती भी एक दूसरे को पहचान लेंगे।

(सबलुल हुदा वर्रिशाद भाग 3 पृष्ठ 132 , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1993 ई)

मतलब यह था कि उनको पहचान लेंगे तो जो फ़ौत होने वाले हैं उनके हाथों में सलाम भेज सकती हूँ।

एक रिवायत में यह शब्द हैं कि क़बीला बनू सलमा का कोई भी शख़्स जब वफ़ात पाने वाला होता तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बात को सुनने के बाद हज़रत बिशर रज़ि की माता उस के पास जा कर कहतीं कि हे अमुक तुझ पर सलाम तो वह जवाब में कहता तुझ पर भी। फिर वह कहतीं कि बिशर को मेरा सलाम कहना

(मिरकातुल मफ़ातीह शरह मिशकातुल मसाबीह भाग 4 पृष्ठ 99 किताबुल जनायज़, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

कोई भी बनू सलमा का फ़ौत होने वाला आदमी होता तो आप उनके पास जा कर कहतीं, उनको सलाम पहुंचाना। बनू सलमा में से थे। पहले शायद मैंने दुश्मन की बात की। दुश्मनों वाली बात नहीं है। वह उनका कहने का अंदाज़ है कि बिशर की वफ़ात बनू सलमा को हलाक कर देगी। क्या मुर्दे एक दूसरे को पहचान लेंगे। अर्थात बहुत सदमा है हमारे लिए। क्या बिशर की तरफ़ सलाम पहुंचाया जा सकता है? और जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ। फिर आप हर फ़ौत होने वाले के माध्यम से यह पैग़ाम देतीं कि वहां जन्नत में जाओगे तो सलाम पहुंचाना

एक रिवायत के अनुसार हज़रत बिशर की बहन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत की बीमारी में आप के पास आई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया तुम्हारे भाई के साथ मैंने ख़ैबर में जो लुक़मा खाया था उस की वजह से में अपनी रगों को कटता महसूस करता हूँ।

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 3 पृष्ठ 82 बाब ज़िक्र मग़ाज़ी, ग़ज़व ख़ैबर, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

इस घटना का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने विस्तार वर्णन फ़रमाया है फ़रमाते हैं कि

यहूदी औरत ने सहाबा रज़ि से पूछा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जानवर के किस हिस्से का गोश्त ज़्यादा पसंद है? सहाबा रज़ि ने बताया कि आप को दस्ती का गोश्त ज़्यादा पसंद है। इस पर उसने बकरा ज़बह किया और पत्थरों पर उस के कबाब बनाए और फिर उस गोश्त में ज़हर मिला दिया विशेष रूप से बाज़ुओं में जिसके बारे में उसे बताया गया था कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस का गोश्त ज़्यादा पसंद करते हैं और फिर सूरज डूबने के बाद जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शाम की नमाज़ पढ़ कर अपने डेरे की तरफ़ वापस आ रहे थे तो आप ने देखा कि आपके ख़ेमे के पास एक औरत बैठी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से पूछा कि बीबी तुम्हारा क्या काम है ?उसने कहा कि हे अबुल क़ासिम !मैं आपके लिए एक तोहफ़ा लाई हूँ। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी साथी सहाबी से फ़रमाया कि जो चीज़ यह देती है इस से ले लू। इस के बाद आप खाने के लिए बैठे तो खाने पर वह भुना हुआ गोश्त भी रखा गया। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में से एक लुक़मा खाया और आपके एक सहाबी बिशर बिन बरअ बिन मारूर ने भी एक लुक़मा खाया। बहरहाल तारीख़ की किताबों में हज़रत बिशर बिन बराय का नाम कुछ जगह बशीर बिन बुराअ भी लिखा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बशीर बिन बुरअ यहां लिखा है मुराद बिशर बिन बुराअ ही हैं। इतने में बाक़ी सहाबा रज़ि ने भी गोश्त खाने के लिए हाथ बढ़ाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मत खाओ क्योंकि इस हाथ ने मुझे ख़बर दी है कि गोश्त में ज़हर मिला हुआ है। अर्थात उस के अर्थात यह नहीं कि आप को इलहाम हुआ था बल्कि यह अरब का मुहावरा है। अर्थ यह हैं कि इस गोश्त को चख कर मुझे मालूम हो गया है कि इस में ज़हर मिला हुआ है। अत: इस जगह यह अभिप्राय नहीं है। इस मुहावरे के अधीन ही वर्णन किया गया है कि आप ने फ़रमाया आपका हाथ बोला था बल्कि मतलब यह है कि इस का गोश्त चखने पर मुझे मालूम हुआ है। अत: अगला वाक्य अनुमानों की वज़ाहत कर देता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ही उस की तफ़सील में फ़रमाते हैं कि क़ुरआन करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने की घटना वर्णन करते हुए एक दीवार के बारे में आता है कि वह गिरना चाहती थी जिसके केवल यह अर्थ हैं कि इस में गिरने के आसार पैदा हो चुके थे। अत: इस जगह भी यही मुराद है। यह मुहावरा बोला गया है। फिर आगे आप फ़रमाते हैं कि इस पर बशीर ने कहा अर्थात बिशर बिन बराअ रज़ि ने कि जिस ख़ुदा ने आपको इज़्ज़त दी है इस की क़सम खा कर मैं कहता हूँ कि मुझे भी इस लुक़्मे में ज़हर मालूम हुआ है। मेरा दिल चाहता था कि मैं इस को फेंक दूं लेकिन मैंने समझा कि अगर मैंने ऐसा किया तो शायद आपकी तबीयत पर बुरा ना गुज़रे और आप का खाना ख़राब ना हो जाए। तसल्ली मुझे नहीं थी लेकिन मुझे लग रहा था कि कुछ है और जब आप ने वह लुक़मा निगला तो मैंने भी आप के अनुकरण में निगल लिया। यद्यपि मेरा दिल यह कह रहा था कि चूँकि मुझे शंका है कि इस में ज़हर है इसलिए काश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह लुक़मा ना निगलें। इस के थोड़ी देर बाद बशीर की तबीयत ख़राब हो गई और कुछ रिवायतों में तो यह है कि वह वहीं ख़ैबर में फ़ौत हो गए और कुछ में यह है कि इस के बाद कुछ समय बीमार रहे और इस के बाद फ़ौत हो गए। इस पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ गोश्त उस का एक कुत्ते के आगे डलवाया जिसके खाने से वह कुत्ता मर गया। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस औरत को बुलाया और फ़रमाया तुमने उस बकरी में ज़हर मिलाया है। उसने कहा कि आपको यह किस ने बताया है। आप के हाथ में इस वक़्त बकरी का दस्त था। आप ने फ़रमाया इस हाथ ने मुझे बताया है। इस पर इस औरत ने समझ लिया कि आप पर यह राज़ खुल गया है और उसने इक़रार किया कि उसने ज़हर मिलाया है। इस पर आप ने इस से पूछा कि इस घृणित कार्य पर तुमको किस बात ने आमादा किया। उसने जवाब दिया कि मेरी क़ौम से आपकी लड़ाई हुई थी और मेरे रिश्तेदार इस लड़ाई में मारे गए थे। मेरे दिल में ये ख़्याल आया कि मैं इन को ज़हर दे दूं। अगर उनका कारोबार इन्सानी कारोबार होगा तो हमें उनसे नजात हासिल हो जाएगी और अगर यह वास्तव में नबी होंगे तो ख़ुदा तआला उनको ख़ुद बचा लेगा। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की यह बात सुनकर उसे माफ़ फ़र्मा दिया और इस की सज़ा जो यक़ीनन क़त्ल थी उसे ना दी। यह घटना बताती है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किस तरह अपने मारने वालों और अपने दोस्तों के मारने वालों को बख़श दिया करते थे और वास्तव में उसी वक़्त आप सज़ा दिया करते थे जब किसी शख़्स का ज़िन्दा रहना आइन्दा बहुत से फ़ित्नों का कारण हो सकता था

(उद्धरित दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन,अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 327 से 329)

बहरहाल यह एक आम तास्सुर है। कुछ दुश्मन यह आरोप लगाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात इस ज़हर से हुई थी और तारीख़ तथा सीरत की कुछ किताबों ने भी यह बहस उठाई है और कुछ सीरत लिखने वाले

इस वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहादत का मुक़ाम देने के लिए इन रिवायतों को क़बूल करने के लिए तैयार हो जाते हैं जिनमें यह ज़िक्र है कि इस ज़हर की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वफ़ात पाई थी जबकि हक़ीक़त में यह बात दरुस्त नहीं है। इस पर हमारे रिसर्च सेल ने भी एक नोट मुझे भेजा था। वह भी ऐसा है कि मैं यहां सुना देता हूँ। इस के अनुसार वे कहते हैं कि तारीख़ और सीरत की किताबें हों या हदीस की, एक बात प्रमाणिक है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हरगिज़ उस ज़हर की वजह से नहीं हुई थी। जो कोई ऐसा कहता है पहले तो वह इन समस्त रिवायतों का इलम नहीं रखता या वे ग़लती खाने वाले हैं। स्पष्ट रहे कि ज़हर दिए जाने की घटना जंग ख़ैबर के अवसर पर हुई जो कि छः हिज्री के आख़िर या सात हिज्री के आख़िर या सात हिज्र के प्रथम का घटनी है। और इस के लगभग चार साल बाद तक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िन्दा रहे। भरपूर ज़िन्दगी गुज़ारी। इसी तरह जिस तरह इस से पहले जंगों में भी जाते रहे। इबादत और अन्य कामों में भी रत्ती भर फ़र्क़ नहीं आया। लगभग चार साल बाद बुख़ार और सिरदर्द की कैफ़ीयत होना और इस के बाद वफ़ात पा जाना उस को कोई अक़लमंद यह नहीं कह सकता कि ज़हर की वजह से चार साल बाद असर हुआ है। असल में बुख़ारी और कुछ दूसरी हदीस की किताबों में एक हदीस है जिसके अनुवाद को दरुस्त ना समझने की वजह से यह अभिप्राय निकाला जाता है कि मानो इसी ज़हर की वजह से वफ़ात हुई थी हालाँकि यह दरुस्त नहीं है। बुख़ारी की वह हदीस यह है, इस का अनुवाद वर्णन कर देता हूँ कि हज़रत आईशा रज़ि फ़रमाती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मौत की बीमारी में यूं फ़रमाते थे कि आईशा इस खाने की तकलीफ़ जो मैंने ख़ैबर में खाया था मुझे हमेशा महसूस होती रही और अब भी इस ज़हर से में अपनी रगें कटती हुई महसूस कर रहा हूँ।

(सही अल-बख़ारी कितअबुल मग़ाज़ी बाबु मर्ज़ नबी हदीस 4428)

यह वह हदीस है जिससे यह नतीजा निकाला जाता है कि कुछ मुस्लमान मुफ़स्सिरीन भी और मुहद्दिसीन भी यही कहते हैं कि मानो इसी तकलीफ़ की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई थी। और फिर उसी को सामने रखते हुए यह भी व्याख्या करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस वजह से शहीद भी क़रार दिया जा सकता है या कुछ के नज़दीक दिया जाता है। जबकि यह रिवायत इस बात की ताईद नहीं करती। इस में सिर्फ एक तकलीफ़ का इज़हार है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वक़्त फ़रमाया और हर कोई जानता है कि कई बार कोई जिस्मानी तकलीफ़ या ज़ख़्म या बीमारी कभी कभी ख़ास ख़ास अवसरों पर किसी कारण से बाहर आ जाती है। ख़ैबर के अवसर पर जो ज़हर मिला गोश्त आप ने खाया उस के बारे में रिवायतों की तफ़सील में जाएं तो यह भी मिलता है कि ज़हर मिला हुआ यह गोश्त आप ने मुँह में डाल लिया था लेकिन निगला नहीं था। लेकिन अगर निगला भी था तो आपकी भरपूर ज़िन्दगी इस बात को साबित करती है कि वफ़ात की वजह बहरहाल यह नहीं थी। हाँ इस ज़हर की वजह से मेदे को या अंतड़ियों को जो नुक़्सान पहुंचा था वह बीमारी में ज़्यादा हो गई और यह क़ुदरती बात है कई बार इस तरह हो जाता है और मुँह में जाने की वजह से आपके हलक़ या कव्वे पर ज़ख़्म आ गया था और कभी कभी खाने के दौरान इस में तकलीफ़ महसूस फ़रमाते थे। हादीसों में यह घटना पूरी तफ़सील के साथ मौजूद है और इस में ये भी लिखा हुआ है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हो गया था कि इस में ज़हर है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को खाने से रोक दिया था और ज़हर मिलाने वाली औरत को बुला कर पूछा तो उसने बताया कि हम ने इसलिए ज़हर मिलाया था कि अगर आप ख़ुदा की तरफ़ से सच्चे रसूल हैं तो आप बच जाऐंगे वर्ना हमें आप से नजात मिल जाएगी। यहूदी तो इस को देखने के बाद आप के बचने का ऐलान कर रहे हैं और इस औरत का तो यह कहना था कि इतना ख़तरनाक ज़हर था फिर भी आप बच गए तो आप के बच जाने की वजह से कुछ रिवायतों में तो इस औरत के इस्लाम क़बूल कर लेने का भी ज़िक्र मिलता है। जो भी हो वह यहूदी तो इस ज़हर से ना मरने का इक़रार कर रहे हैं और इस को मोजिज़ा क़रार दे रहे हैं। इसलिए यह कहना कि इस ज़हर की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई यह हरगिज़ दरुस्त नहीं है। बाक़ी ज़िक्र इंशा अल्लाह भविष्य में होंगे।

इस वक़्त में दो मरहूमीन का ज़िक्र करता हूँ जिनके जनाज़ा ग़ायब इंशा अल्लाह नमाज़ों के बाद में पढ़ाऊंगा। पहला है आदरणीय नसीर अहमद साहिब जो आदरणीय अली मुहम्मद साहिब राजनपुर के बेटे थे। 21 नवम्बर 2019 ई को 63साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ आपके पड़दादा मुहम्मद दीन साहिब के द्वारा से हुआ था। आप तहसील ज़ीरा ज़िला फ़िरोज़पुर के एक गांव मलसयां के रहने वाले थे। उन्होंने अपने भाई मुकर्रम इलाही बख़्श साहिब के साथ 1907 ई में ख़त के द्वारा बैअत की थी और फिर 1908 ई के जलसा सालाना कादियान पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के हाथ पर बैअत की तौफ़ीक़ पाई। यह मरहूम नसीर साहिब जो हैं उनको राजनपुर में नायब अमीर ज़िला के इलावा नायब ज़ईम अन्सारुल्लाह और सदर जमाअत के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। पाँच वक़्त नमाज़ बाजमाअत के पाबंद थे। बड़ा एहतिमाम करते थे। उनकी जवाइंट फ़ैमिली सिस्टम था और घर में मौजूद तमाम भाईयों, भतीजों, भतीजियों को नमाज़ के औक़ात में बार-बार याद दिलाते थे। फ़ज्र के वक़्त पूरी हवेली का चक्कर लगाते थे। बहुत बड़ी हवेली थी। इस में ये लोग इकट्ठे रहते थे। विभिन्न घर थे। सबको नमाज़ फ़ज्र के लिए बेदार करते थे। तिलावत क़ुरआन करीम ख़ुद भी करते थे और लोगों से भी अपने रिश्तेदारों से भी, जो भी बच्चे इत्यादि थे सबसे पूछते थे और सुस्ती में तलक़ीन करते थे कि बाक़ायदा किया करो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अध्ययन ख़ुद भी करने वाले थे और अपने बच्चों को और रिश्तेदारों को जो भाई भतीजे थे उनको भी नसीहत किया करते थे और इसी तरह एम टी ए पर ख़ुत्बा बाक़ायदा सुनते और फिर इस बात को यक़ीनी बनाते थे कि सब ने, इन सब मकीनों ने जो एक ही हवेली में रहते हैं ख़ुत्बा सुन भी लिया है कि नहीं। बहुत मुख़ालिफ़त के बावजूद तब्लीग़ का कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते थे और अगर घर वाले एहतियात का कहते कि हालात ऐसे हैं, सावधानी करें तो उनका जवाब होता था कि मैं अल्लाह तआला को क्या मुँह दिखाऊँगा कि इस के भेजे हुए का पैग़ाम लोगों तक नहीं पहुंचाया। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा एक बेटी और तीन बेटे शामिल हैं। आपके एक बेटे ख़ालिद अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं जो आजकल माली (मग़रिबी अफ़्रीक़ा) में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और वहां होने की वजह से जनाज़े में शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए। और उनकी नस्लों को भी, औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा आदरणीय अताउल करीम मुबश्शिर साहिब इब्न मियां अल्लाह दत्ता साहिब किरतो ज़िला शेख़ूपूरा हाल कैनेडा का है। 13 नवम्बर को 75 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत आपके पिता आदरणीय मियां अल्लाह दत्ता साहिब के द्वारा आई थी जिन्होंने 1934 ई में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो के हाथ पर बैअत की थी और फिर अहमदी होने के बाद सारी ज़िन्दगी वक़्फ़ की तरह गुज़ारी। हमेशा तब्लीग़ करते रहे। बहुत से ख़ानदान अहमदी किए और सारी उम्र वक़्फ़ की रूह के साथ जमाअत की ख़िदमत की। जब तक आप पाकिस्तान में थे तो लाहौर में विभिन्न जमाअत की ख़िदमतें कीं। फिर 2007 ई में आप कैनेडा शिफ़्ट हो गए। वहां अपनी जमाअत में सैक्रेटरी इशाअत के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। उनको फेफड़ों की बीमारी की वजह से स्थायी तौर पर ऑक्सीजन लगी हुई थी। जब तक सेहत ने इजाज़त दी अपनी व्हेल चेयर पर बाक़ायदगी से नमाज़ अदा करने के लिए जाया करते थे। बीमारी का बड़ी हिम्मत से मुक़ाबला क्या ,कभी कोई शिकवा नहीं किया। निज़ाम जमाअत और ख़िलाफ़त से इख़लास और वफ़ा का सम्बन्ध था। बड़ा मुहब्बत का सम्बन्ध था। बहुत होशियार थे और राए वाले थे। साफ़-दिल और खरे इन्सान थे। उनके ख़ानदान का हर आदमी यह इज़हार करता है कि मेरे साथ बहुत गहरा सम्बन्ध था। हर एक से मुख़लिस और लाभ पुहंचाने वाले वजूद थे कभी किसी का गिला शिकवा नहीं किया। हर एक के साथ मुहब्बत का दोस्ताना सम्बन्ध था। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नि के इलावा दो बेटियां और दो बेटे शामिल हैं। आपके एक बेटे अताउतल ताहिर साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं जो आजकल सदर सदर अन्जुमन अहमदिया के दफ़्तर में नायब नाज़िर हैं और वहां उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिल रही है और एक पोते जाज़िब अहमद जामिआ अहमदिया कैनेडा में पढ़ रहे हैं। जमाअत के शायर अब्दुल करीम क़ुदसी साहिब जो हैं आप उनके बड़े भाई थे। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को,उनकी नस्लों को उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 20 दिसम्बर 2019 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति बदरी सहाबा

हज़रत हिलाल बिन उमय्या वाक़िफ़ी रज़ी अल्लाह अन्हो की सीरत मुबारका का वर्णन

जंग तबूक के मौक़ा पर पीछे रह जाने वाले सहाबा के सम्बन्ध विच्छेद और उनकी माफ़ी का विस्तारपूर्वक वर्णन

वक़्फ़े नौ मर्कज़िया (यूके की वेब साईट का आरम्भ का ऐलान और संक्षिप्त परिचय।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 6 दिसम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टलफ़ोरड सिर्रे (यू. के)

आज जिन बदरी सहाबी का मैं ज़िक्र करूँगा उनका नाम है हज़रत हिलाल रज़ि। हज़रत हिलाल बिन उमय्या वाकफ़ी रज़ि उनका पूरा नाम है। यह अन्सार के क़बीला औस के ख़ानदान बनू वाक़िफ़ से सम्बन्ध रखते थे। उनके पिता का नाम उमय्या बिन आमिर और माता का नाम अनीसा बिन्त हिदम था जो हज़रत कुलसूम बिन हिदम की बहन थीं। कुलसूम बिन हिदम वही सहाबी हैं जिनके यहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हजरत मदीना के अवसर पर क़बा में क़ियाम फ़रमाया था।

(असदुलग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 5 पृष्ठ 380-381 हिलाल बिन उमय्यह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

(मारफ़तुल सहाबा भाग 4 पृष्ठ 383 हदीस 2995 हिलाल बिन उमय्यह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत हिलाल बिन उमय्या की दो शादियों का ज़िक्र मिलता है एक फ़ुरयैअह बिन्त मालिक बिन दुख़शम जबकि दूसरी मुलैक: बिन्त अब्दुल्लाह के साथ। हज़रत हिलाल रज़ि की दोनों बीवियों को इस्लाम क़बूल करने की सआदत नसीब हुई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर उन्होंने बैअत की।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 8 पृष्ठ 282 से 285 व मिन निसाइ अल ,अल-कवाकल: । दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

हज़रत हिलाल बिन अमीह रज़ि बहुत पहले इस्लाम क़बूल करने वाले थे और उन्होंने क़बीला बनू वाक़िफ़ के बुत तोड़े थे और फ़तह मक्का के दिन उनकी क़ौम का झंडा उनके पास था।

(असदुलग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 5 पृष्ठ 381 हिलाल बिन उमय्यह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि को जंग बदर, जंग उहद और इसी तरह बाद की जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल होने की सआदत नसीब हुई थी फिर भी जंग तबूक में यह शामिल ना हो सके थे। इब्न हश्शाम ने बदरी सहाबा की जो सूचि अपनी किताब में दर्ज की है इस में हज़रत हिलाल रज़ि का नाम शामिल नहीं है परन्तु बुख़ारी ने अपनी सही बुख़ारी में उन्हें बदरी सहाबा में शुमार किया है

(अलअसाब: फ़ी तमीईज़ अलसहाबा भाग 3 पृष्ठ 428 हिलाल बिन उमय्यह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लुबनान 2005 ई) (असदुलग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 5 पृष्ठ 381 हिलाल बिन उमय्यह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई) (सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब तसमी मन सम्म मन अहल बदर)

हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि इन तीन अन्सार सहाबा में से थे जो जंग तबूक में बिना किसी कारण के शामिल ना हो सके थे। दूसरे दो सहाबा कअब बिन मालिक रज़ि और मुर्अर बिन मुरारत रज़ि थे। उनके बारे में क़ुरआन करीम में येह आयत भी नाज़िल थी कि

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ۔

(अत्तौब 118)

और उन तीनों पर भी अल्लाह तौबा क़बूल करते हुए झुका जो पीछे छोड़ दिए गए थे यहां तक कि जब ज़मीन उन पर बावजूद खुले होने के तंग हो गई और उनकी जानें तंगी महसूस करने लगीं और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से पनाह की कोई जगह नहीं मगर उसी की तरफ़। फिर वह उन पर क़बूलीयत की तरफ़ झुकते होते हुए झुक गया ताकि वे तौबा कर सकें और यक़ीनन अल्लाह ही बार-बार तौबा क़बूल करने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

(असदुलग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 5 पृष्ठ 381 हिलाल बिन उमय्यह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

जंग तबूक 9 हिज्री में हुआ था और सही बुख़ारी में इस के बारे में एक तफ़सीली रिवायत भी है जिसमें इन तीनों सहाबा के पीछे रह जाने का विस्तार से वर्णन हुआ है

हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि के पोते अब्दुर रहमान अपने पिता अब्दुल्लाह बिन कअब से रिवायत करते हैं कि हज़रत कअब रज़ि जब अन्धे हो गए तो वह उन्हें पकड़ कर ले जाया करते थे। उन्होंने बताया कि मैंने हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि को वह घटना वर्णन करते हुए सुना है। यह जो लंबी रिवायत है यह हज़रत कअब रज़ि के हवाले से है। हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि जिन सहाबी का ज़िक्र हो रहा है उनका ज़िक्र बीच में आ जाता है लेकिन यह एक रिवायत मिलती है

बहरहाल वह कहते हैं कि हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि को वो घटना वर्णन करते हुए सुना जबकि वो पीछे रह गए थे अर्थात तबूक की घटना। हज़रत कअब रज़ि ने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किसी जंग में भी पीछे नहीं रहा जो आप ने किया हो सिवाए जंग तबूक के। हाँ जंग बदर में भी पीछे रह गया था और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी पर भी नाराज़गी का इज़हार नहीं किया था जो इस जंग से पीछे रह गया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिर्फ क़ुरैश के क़ाफ़िले को रोकने के इरादे से निकले थे मगर नतीजा यह हुआ कि अल्लाह ने बग़ैर उस के कि जंग की ठानी हो उनको दुश्मन से टकरा दिया और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उक़बा की रात में भी मौजूद था। बदर की घटना वर्णन करते हैं कि बदर में भी शामिल नहीं हुआ था लेकिन इस में ना शामिल होने की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई नाराज़गी का इज़हार नहीं फ़रमाया था। बहरहाल कहते हैं जब हमने उक़बा में इस्लाम पर क़ायम रहने का दृढ़ वादा किया था और मैं नहीं चाहता कि इस रात के बदला मुझे बदर में शरीक होने का मौक़ा मिलता यद्यपि बदर लोगों में इस से ज़्यादा मशहूर है और मेरी यह हालत थी कि मैं कभी भी उतना मज़बूत और ख़ुश-हाल नहीं था जितना कि इस वक़्त जबकि मैं आप से इस जंग में पीछे रह गया था अर्थात तबूक के। कहते हैं कि अल्लाह की क़सम ! इस से पहले कभी भी मेरे पास सवारी के ऊंट इकट्ठे नहीं हुए थे और इस जंग के समय में सवारी के दो ऊंट इकट्ठे कर लिए थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस जंग का भी इरादा करते थे तो आप उस को छुपा कर रखते किसी और तरफ़ जाने का इज़हार करते थे। प्राय यह होता था कि जो जंगी strategy है इस की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक तो छुपाकर रखा करते थे दूसरे सफ़र भी लंबा किया करते थे या रास्ता बदलते थे। बहरहाल कहते हैं कि जब वह जंग हुई तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस जंग में सख़्त गर्मी के वक़्त निकले अर्थात जंग तबूक में और आप के सामने दूर दराज़ का सफ़र और ग़ैर-आबाद वीराना और जो दुश्मन था बहुत बड़ी तादाद में था। आप ने मुस्लमानों को उनकी हालत खोल कर वर्णन कर दी ताकि वे अपने हमले के लिए जो तैयारी करने का हक़ है तैयारी करें। इस जंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई चीज़ छुपाई नहीं

रखी बल्कि बता दिया कि अमुक जगह हमने जाना है और अमुक दुश्मन है इसलिए तैयारी अच्छी तरह कर लो। कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको इस तरफ़ का भी बता दिया जिस तरफ़ आप जाना चाहते थे और मुस्लमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बहुत अधिक थे। हज़रत कअब रज़ि कहते थे और कोई शख़्स भी ऐसा ना था जो गैर हाज़िर रहना चाहता हो मगर वह ख़्याल करता कि इस का गैरहाज़िर रहना आप से पोशीदा रहेगा जब तक कि इस से बारे में अल्लाह की वह्य नाज़िल ना हो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह जंग उस वक़्त की कि जब फल पक चुके थे और साय अच्छे लगते थे अर्थात मौसम भी गर्म था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मुस्लमानों ने भी सफ़र की तैयारी शुरू कर दी। कहते हैं कि मैं सुबह को जाता ताकि मैं भी उनके साथ सामान की तैयारी करूँ, सफ़र की तैयारी करूँ। मैं वापस लौटता और कुछ भी ना किया होता। इरादे से तो निकलता था लेकिन शाम को वापस आ जाता और तैयारी नहीं होती थी। मैं अपने दिल में कहता कि मैं तैयारी कर सकता हूँ। सामान मेरे पास मौजूद है। बहरहाल कहते हैं यह ख़्याल मुझे लेट करता रहा यहां तक कि लोगों ने तैयारी कर ली और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक सुबह रवाना हो गए और मुस्लमान भी आप के साथ रवाना हुए और मैंने अपने सफ़र की तैयारी में से कुछ भी ना किया था। मैंने सोचा कि आप के जाने के एक दिन या दो दिन बाद तैयारी कर लूँगा और फिर उनसे जा मिलूँगा क्योंकि सफ़र की सवारी तो मेरे पास मौजूद थी और मैं आसानी से कर सकता था। बहरहाल कहते हैं उनके चले जाने के बाद दूसरी सुबह गया कि सामान तैयार कर लूं मगर फिर वापस आ गया और कुछ भी ना किया। फिर में अगले दिन अर्थात तीसरे दिन गया और वापस लौट आया और कुछ भी फ़ैसला ना कर सका और यही हाल रहा यहां तक कि लश्कर तेज़ी से सफ़र करते हुए बहुत आगे निकल गया। मैंने भी इरादा कर लिया कि कूच करूँ और उनको पा लूं और काश कि मैं ऐसा करता मगर मुझे उस की ताक़त नसीब ना हुई, मैं कर नहीं सका । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जाने के बाद जब भी में इन लोगों में निकलता और उनमें चक्कर लगाता तो मुझे यह बात दुखी कर देती क्योंकि जो पीछे रह गए थे उनमें से अक्सर में ऐसे ही शख़्स को देखता जिन्हें मुनाफिकत के कारण हीनता से देखा जाता था। कहते हैं जब में मदीना की गलियों में निकलता तो उन्हीं लोगों को देखता जिनके बारे में आम तौर पर यह विचार था कि उनमें निफ़ाक़ पाया जाता है या कमज़ोरों में से ऐसा शख़्स जिसको अल्लाह तआला ने असहाय ठहराया था या माज़ूर थे या ऐसे लोग जो बुज़दिल थे और जिनके दिल में नफ़ाक़ था। बहरहाल कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तबूक पहुंचने से पहले मुझे याद न क्या, मेरे बारे में ना पूछा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तबूक में लोगों के साथ बैठे थे जब आप ने पूछा कि कअब कहाँ है? बनू सलमा में से एक शख़्स ने कहा हे रसूलुल्लाह इस को इस की दो चादरों ने और इस की अपने दाएं बाएं मुड़ कर देखने ने रोक रखा था आर्थात एक तो शायद पैसा आ गया है या कोई अंहकार पैदा हो गया है इसलिए नहीं आ सका। हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि ने यह सुनकर कहा क्या बुरी बात है जो तुमने कही है। उन्होंने कहा नहीं , ऐसी बात नहीं है। फिर उन्होंने कहा कि हे अल्लाह के रूसल ! इस के बारे में हमें अच्छा ही तजुर्बा है। कअब के बारे में अब तक तो हमारा तजुर्बा अच्छा है। ना इस में कोई गर्व है, ना अंहकार है, ना मुनाफ़क़त है। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सुनकर ख़ामोश हो गए।

हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि कहते थे कि जब मुझे यह ख़बर पहुंची कि आप जो इस सफ़र पर निकले थे वापस आ रहे हैं तो मुझे फ़िक्र हुई और मैं झूटी बातें सोचने लगा कि किस बात से कल आप की नाराज़गी से बच जाऊं। कोई बहाना करूँ और अपने घर वालों में से हर एक राय वाले से मैंने इस बारे में मश्वरा लिया, लोगों से भी पूछा कि क्या बहाना हो सकता है। जब यह कहा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आन पहुंचे तो मेरे दिल से सारे झूठे विचार दूर हो गए। सब बहाने निकल गए। सब झूठ निकल गए और मैंने समझ लिया कि मैं कभी भी आप के ग़ुस्से से ऐसी बात से बचने वाला नहीं जिसमें झूठ हो। इसलिए मैंने आप से सच सच वर्णन करने की ठान ली और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए। जब आप किसी सफ़र से आते तो पहले मस्जिद में जाते और इस में दो रकातें नफ़ल पढ़ते। फिर लोगों से मिलने के लिए बैठ जाते। जब आप ने यह किया तो पीछे रह जाने वाले लोग आप के पास आ गए। जो नहीं गए थे वे आ गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहाना वर्णन करने लगे। हर एक बहाने करने लग गया कि इस के ना जाने की क्या-क्या वजह थी और कसमें खाने लगे और ऐसे लोग 80 से कुछ ऊपर थे जो इस तरह की कसमें खा कर, ग़लत बातें वर्णन कर के बहाने कर रहे थे। उन्होंने अपने बहाने वर्णन किए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे उनके ज़ाहिरी बहाने मान लिए और उनसे बैअत ली और उनके लिए इस्तिग़फ़ार किया और उनका अंदरूना अल्लाह के सपुर्द किया। उन्होंने कहा ठीक है ज़ाहिर में तुम यह कहते हो तो मान लेता हूँ। अल्लाह तआला तुम्हारी बख़शिश के सामान करे। बाक़ी यह मामला मैं अल्लाह के सपुर्द करता हूँ। फिर कहते हैं कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया जब मैंने आप को सलाम किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़ शख़्स की तरह मुस्कुराए। मेरी तरफ़ देखा मुस्कुराए लेकिन इस तरह देखना था जिस तरह कि नाराज़गी होती है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आगे आओ। मैं आया और आप के सामने बैठ गया। आप ने मुझ से पूछा कि किस बात ने तुम्हें पीछे रखा है? हमारे साथ क्यों नहीं सफ़र किया क्या तुमने सवारी नहीं ख़रीदी थी? मैंने कहा हाँ अल्लाह क़सम ! मैं ऐसा हूँ कि अगर आप के सिवा दुनिया के लोगों में से किसी और के पास बैठा होता तो मैं समझता हूँ कि मैं ज़रूर ही उस की नाराज़गी से बहाना कर के बच जाता क्योंकि मुझे वर्णन करने की ताकत दी गई है। मुझे बड़े अच्छे बहाने बनाने आते हैं मैं बच सकता था मगर अल्लाह की क़सम मैं जानता था कि अगर मैंने आज आप से कोई ऐसी झूठी बात वर्णन की जिससे आप मुझ पर राज़ी हो गए तो शीघ्र अल्लाह आप को मुझ पर नाराज़ कर देगा। मैं वर्णन कर के नाराज़गी से बच तो सकता हूँ लेकिन अल्लाह तआला की नाराज़गी किसी ना किसी वक़्त ज़ाहिर हो जाएगी और वह आप को भी पता लग जाएगी। फिर कहते हैं कि अगर मैं आप से सच्ची बात वर्णन करूँगा जिसकी वजह से आप मुझ पर नाराज़ हों तो मैं इस में अल्लाह के क्षमा की उम्मीद रखता हूँ। आप सच्ची बात से नाराज़ हो जाऐंगे लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह तआला मुझ से क्षमा का सुलूक करेगा। फिर हज़रत कअब रज़ि ने निवेदन किया कि नहीं अल्लाह की क़सम मेरे लिए कोई बहाना नहीं था कि बहाना वर्णन करूँ। अल्लाह की क़सम कोई बहाना नहीं था मैं कभी भी ऐसा मज़बूत हाल नहीं हुआ जितना कि इस वक़्त था जब आप से पीछे रह गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फ़रमाया उसने सच वर्णन किया है। फिर आप ने फ़रमाया कि उठो यहां तक कि अल्लाह तुम्हारे बारे में कोई फ़ैसला करे। यहां मेरे सामने से चले जाओ। मैं उठकर चला गया और बनू सलमा में से कुछ लोग भी उठकर मेरे पीछे हो लिए। उन्होंने मुझे कहा कि अल्लाह की क़सम हमें इलम नहीं कि तुमने इस से पहले कोई क़सूर क्या हो और तुम यह भी ना कर सके कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कोई बहाना ही बनाते जबकि उनके पीछे रहने वालों ने, बहुत सारे लोगों ने जो 80 लोग थे, आप के सामने बहाने बनाए थे। जिसका पहले ज़िक्र हो चुका है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

कर देना ही तुम्हारे इस गुनाह बख़शाने के लिए काफ़ी था। कअब रज़ि कहते हैं कि अल्लाह की क़सम यह लोग मुझे मलामत ही करते रहे यहां तक कि मैंने भी इरादा कर लिया कि लौट जाऊं और अपने आपको झुठला दूं। दोबारा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में वापस जाऊं और निवेदन करूँ कि मैंने जो पहले बात की थी वह ग़लत थी और कोई ना कोई बहाना पेश कर दूं लेकिन कहते हैं फिर मैंने उन लोगों से पूछा, जो मुझे कह रहे थे कि तुम ने ग़लत किया कि सच्ची बात बता दी, वापस जाओ। कहते हैं मैंने उनसे, उन लोगों से पूछा जो मुझे भड़काने वाले थे या ग़लत काम की तरफ़ उभारने वाले थे कि क्या मेरे साथ कोई और भी है जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस किस्म का इक़रार क्या हो जैसी बातें मैंने की हैं, सच सच वर्णन कर दिया हो। उन्होंने कहा कि हाँ। दो और आदमी हैं उन्होंने भी वही कहा है जो तुमने कहा है और उनको भी वही जवाब मिला है जो तुम्हें दिया गया है। मैंने कहा वह कौन हैं। कहने लगे कि एक तो मुरारा बिन रबी अमरी रज़ि हैं और दूसरे हिलाल बिन उमय्या वाकफ़ी रज़ि हैं। हज़रत कअब रज़ि कहते हैं कि उन्होंने मुझसे ऐसे दो नेक आदमियों का ज़िक्र किया जो बदर में शरीक हो चुके थे। इन दोनों में मेरे लिए नमूना था। जब लोगों ने इन दोनों का मुझ से ज़िक्र किया तो मैं उनके पास से चल पड़ा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को हम से बातचीत करने से मना दिया।

जब यह ज़िक्र हो गया कि हाँ दो शख़्स और हैं तब मुझे ख़्याल आया कि ये दोनों हक़ीक़ी नेक लोग हैं, बदर में भी शामिल हो चुके हैं। इसलिए में अब उन्हीं के साथ शामिल हूँगा। कोई ग़लत बहाना नहीं करूँगा। कहते हैं मैं चला गया और इस दौरान में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को हमसे बातचीत करने से मना कर दिया अर्थात एक तरह का मुक़ातआ (सम्बन्ध विच्छेद) हो गया। लोग उनसे कतराने लगे जो उन लोगों में से थे जो आप से पीछे रह गए थे। मानो कि हमसे बिलकुल अपरिचित हैं। इस बात पर जब मना कर दिया गया तो हमारे सामने नहीं आते थे, हमसे बचते थे जिस तरह हमें जानते ही ना हूँ यहां तक कि यह ज़मीन भी मुझे ऊपरी नज़र आने लगी। वह ना थी जिसको मैं जानता था। मदीना की गलियाँ यह शहर यह ज़मीन मेरे लिए बिलकुल ऊपरी हो गई। यह मुझे वह चीज़ नहीं लग रही थी जिसको मैं पहले जानता था। लगता था में एक नई जगह पर आ गया हूँ क्योंकि लोग मेरे से कतरा रहे थे। बहरहाल कहते हैं कि इस हालत पर पच्चास रातें रहे। और जो मेरे दूसरे दो साथी थे हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि और मुरारा बिन रबी उन्होंने बहुत अधिक शर्मिंदगी महसूस की और उनका तो यह हाल था कि वह अपने घरों में बैठ कर रोने लगे। वह हिलाल रज़ि इत्यादि तो घरों से बाहर ही नहीं निकले। हज़रत हिलाल रज़ि तो घर में रहे। स्थायी घर में रहते थे और रोते थे और हज़रत कअब रज़ि कहते हैं कि मैं तो उन लोगों में ज़्यादा जवान था और उन लोगों से मुसीबत को ज़्यादा बर्दाश्त करने वाला था। मैं बाहर भी निकलता था और मुस्लमानों के साथ नमाज़ों में शिरकत करता था। मैं घर में बैठ कर रोता नहीं रहा। उनकी तरह इस्तिग़फ़ार नहीं करता रहा। इस्तिग़फ़ार करता था लेकिन साथ ही मैं बाहर भी निकलता था और मुस्लमानों के साथ नमाज़ों में भी शरीक होता था। मस्जिद भी आता था। बाज़ारों में भी फिरता था मगर मुझसे कोई बात नहीं करता था और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास भी जाता था। मस्जिद में मज्लिस लगी होती थी तो वहां भी जाता था। आप को सलाम करता था जबकि आप नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठे होते और अपने दिल में कहता कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे सलाम का जवाब देने में अपने होंठ हिलाए हैं या नहीं और आप के क़रीब हो कर नमाज़ पढ़ता और नज़र चुरा कर आप को देखता और जब नमाज़ पढ़ने लगता तो आप मेरी तरफ़ देखते और जब मैं आप की तरफ़ तवज्जा करता तो आप मुझ से मुँह फेर लेते। जब लोगों की यह कठोरता मुझ पर तूल पकड़ गई तो मैं चला और मैंने हज़रत अबू क़तादा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के बाग़ की दीवार को फलांगा। यह मेरे चाचा के बेटे थे और मुझे तमाम लोगों से ज़्यादा प्यारे थे। कहते हैं मैंने उनको अस्सलामु अलैकुम कहा। फिर कहते हैं कि अल्लाह की क़सम उन्होंने मुझे सलाम का जवाब तक ना दिया। मैंने कहा अबू कतादह रज़ि मैं तुमसे अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम जानते हो कि मैं अल्लाह और इस के रसूल से मुहब्बत रखता हूँ? वह ख़ामोश रहे। फिर उनसे पूछा और उनको क़स्म दी तो वह फिर ख़ामोश रहे। फिर तीसरी बार उनसे पूछा और उन्हें क़िस्म दी मगर उन्होंने फिर कहा कि अल्लाह और इस का रसूल सल्लल्लाहो बेहतर जानते हैं कि मुहब्बत रखते हो या नहीं रखते। यह सुनकर मेरी आँखों से आँसू जारी हो गए। मैं वहां से दीवार फलाँग कर फिर चला आया। फिर हज़रत कअब रज़ि कहते थे कि इस समय में कि मैं मदीना के बाज़ार में चला जा रहा था तो क्या देखता हूँ कि सीरिया के निबतियों से जो मदीना में खाना लेकर बेचने के लिए आए हुए थे एक निबती कह रहा था कि कअब बिन मालिक का कौन बताएगा? यह सुनकर लोग इस को इशारे से बताने लगे। जब वह मेरे पास आया तो उसने ग़स्सान के बादशाह की तरफ़ से एक ख़त मुझे दिया। इस में यह मज़मून था कि अम्मा बअद मुझे यह ख़बर पहुंची है कि तुम्हारे साथी ने तुम्हारे साथ सख़्ती का मामला कर के तुम्हें अलग-थलग छोड़ दिया है और तुम्हें तो अल्लाह तआला ने किसी ऐसे घर में पैदा नहीं किया जहां अपमान हो और तुम्हें नष्ट कर दिया जाए। तुम हम से आकर मिलो। हम तुम्हारा सम्मान करेंगे। कहते हैं जब मैंने यह ख़त पढ़ा तो मैंने कहा यह भी एक आज़माईश है। मैं वह ख़त लेकर तनूर की तरफ़ गया और इस में इस को डाल दिया।

जब पच्चास रातों में से चालीस रातें गुज़रीं तो मैं क्या देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पैग़ाम लाने वाला मेरे पास आ रहा है। उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम से फ़रमाते हैं कि तुम अपनी बीवी से अलग हो जाओ। मैंने पूछा क्या मैं उसे तलाक़ दे दूं या क्या करूँ ? उसने कहा कि इस से अलग रहो और इस के क़रीब ना जाओ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे दोनों साथियों को भी, दूसरे जो दो साथी थे, (हज़रत हिलाल और मुरारा रज़ि)उनको भी ऐसा ही कहला भेजा। कहते हैं मैंने अपनी बीवी से कहा कि अपने घर वालों के पास चली जाओ और इस वक़्त तक उन्हीं के पास रहना कि अल्लाह इस मामला में कोई फ़ैसला करे। हज़रत कअब रज़ि कहते थे कि फिर हिलाल बिन उमय्या रज़ि की बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आई। जिन सहाबी का मैं यह ज़िक्र वर्णन कर रहा हूँ उनकी बीवी आएं और कहने लगीं हे अल्लाह के रसूल! हिलाल बिन उमय्या रज़ि बहुत बूढ़ा है। इस का कोई मुलाज़िम नहीं है। अगर मैं इस की ख़िदमत करूँ तो आप नापसंद तो नहीं फ़रमाएँगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं ठीक है ख़िदमत करती रहो। खाना पकाना ,घर का काम करना वह करती रहो लेकिन वह तुम्हारे क़रीब ना आए। कहने लगी कि अल्लाह क़सम ! इस को तो किसी बात की तहरीक ही नहीं होती। अल्लाह की क़सम वह उस दिन से आज तक रो रहा है। उसने क्या कहना है। जब से इस को सज़ा मिली है, मुक़ातआ (सम्बन्ध विच्छेद) हुआ है, जब से इस के साथ यह मामला हुआ है वह तो इस दिन से बैठा रो रहा है। हज़रत कअब रज़ि कहते हैं कि मेरे कुछ रिश्तेदारों ने मुझ से कहा कि तुम भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अपनी बीवी के बारे में ऐसी ही इजाज़त ले लू जैसे हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि की बीवी को इस की ख़िदमत करने की इजाज़त दी है। इस को मिल गई तो तुम्हें भी मिल जाएगी। मैंने कहा अल्लाह की क़सम मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कभी इस बारे में इजाज़त ना लूं और मुझे क्या मालूम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे इस के बारे में क्या

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

जवाब दें। हज़रत हिलाल रज़ि तो बूढ़े आदमी हैं और मैं जवान आदमी हूँ। इस के बाद कहते हैं मैं दस रातें और ठहरा रहा यहां तक कि हमारे लिए पच्चास रातें उस वक़्त से पूरी हुईं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे साथ बातचीत करने से मना किया था।

जब पचासवें रात की सुबह को नमाज़ फ़ज्र पढ़ चुका और मैं इस वक़्त अपने घरों में से एक घर की छत पर था और इसी हालत में बैठा हुआ था जिसका अल्लाह तआला ने ज़िक्र किया है अर्थात मेरी जान मुझ पर तंग हो चुकी थी और ज़मीन भी बावजूद खुली होने के मुझ पर तंग हो गई थी तो इस समय में मैंने एक पुकारने वाले की आवाज़ सुनी जो सुलह पहाड़ पर, जो मदीना के उत्तर दिशा एक पहाड़ का नाम है, वहां चढ़ कर बुलंद आवाज़ से पुकार रहा था कि अक़ाब बिन मालिक !तुम्हें बशारत हो !कहते हैं मैं यह सुनकर सिज्दे में गिर पड़ा और समझ गया कि मुसीबत दूर हो गई है। अगर उसने जो मुझे पुकारा है, बशारत दी है तो यक़ीनन मेरी बरीयत का कोई सामान हो गया है, मुसीबत दूर हो गई है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब फ़ज्र की नमाज़ पढ़ चुके तो आप ने यह ऐलान फ़रमाया कि अल्लाह ने मेहरबानी कर के हमारी ग़लती को माफ़ कर दिया है। यह सुनकर लोग हमें ख़ुश-ख़बरी देने लगे और मेरे दोनों साथियों की तरफ़ भी ख़ुश-ख़बरी देने वाले गए अर्थात हज़रत हिलाल रज़ि और दूसरे साथी की तरफ़ और एक शख़्स मेरे पास घोड़ा दौड़ाते हुए आया। असलम क़बीले का एक शख़्स दौड़ कर आया और पहाड़ पर चढ़ गया और इस की आवाज़ घोड़े से ज़्यादा तेज़ी से पहुंचने वाली थी। जब वह शख़्स मेरे पास बशारत देने आया जिसकी आवाज़ मैंने सुनी थी तो मैंने अपने दोनों कपड़े उतारे और इस को पहनाए इसलिए कि उसने मुझे बशारत दी थी। और अल्लाह की क़सम ! इस वक़्त इस के अतिरिक्त मेरे पास और कुछ था नहीं। जो मेरे पास उस वक़्त था वह दो कपड़े थे और मैंने दो और कपड़े उधार लिए। किसी से मांगे फिर और उन्हें पहना और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास चला गया और लोग मुझे फ़ौज दर फ़ौज मिलते और तौबा की क़बूलीयत की वजह से मुझे मुबारकबाद देते। कहते थे कि तुम्हें मुबारक हो जो अल्लाह ने तुम पर रहम कर के तौबा क़बूल की है। हज़रत कअब रज़ि कहते थे कि आख़िर मैं मस्जिद पहुंचा। क्या देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठे हैं और आप के इर्द-गिर्द लोग हैं। हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि मुझे देखकर मेरे पास दौड़े आए और मुझसे हाथ मिलाया और मुबारकबाद दी। मुहाजिरीन में से उनके सिवा अल्लाह की कसम कोई शख़्स भी मेरे पास उठकर नहीं आया और तलहा रज़ि की यह बात मैं कभी भी नहीं भूलूँगा। और हज़रत कअब रज़ि कहते थे कि जब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अस्सलामु अलैकुम कहा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया और आप का चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था। फिर आप ने फ़रमाया तुम्हें बशारत हो निहायत ही अच्छे दिन की, इन दिनों में से जब से तुम्हारी माँ ने तुम्हें जना है जो तुम पर गुज़रे हैं। कहते थे कि मैंने पूछा हे अल्लाह के रसूल ! क्या यह बशारत आप की तरफ़ से है या अल्लाह की तरफ़ से? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब ख़ुश होते थे तो आप का चेहरा ऐसा रोशन हो जाता कि मानो वह चांद का टुकड़ा है और हम इस से आप की ख़ुशी पहचान लिया करते थे। कहते हैं कि जब मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने बैठ गया तो मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मैं इस तौबा के क़बूल होने के बदला में अपनी जायदाद से दस्त-बरदार होता हूँ जो अल्लाह और इस के रसूल के लिए सदक़ा होगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपनी जायदाद में से कुछ अपने लिए भी रखो क्योंकि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा अपना वह हिस्सा रख लेता हूँ जो ख़ैबर में है। मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल अल्लाह ने मुझे सच्चाई की वजह से नजात दी और मेरी तौबा में से यह भी है कि मैं हमेशा ही सच बोला करूँगा जब तक कि मैं ज़िन्दा रहूँगा क्योंकि मैं अल्लाह की क़सम मुस्लमानों में से किसी को नहीं जानता कि अल्लाह ने इस को सच्ची बात कहने की वजह से इस ख़ूबी के साथ आज़माया हो जिस ख़ूबी से मेरी आज़माईश की है। इस वक़्त से कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से असल घटना वर्णन की मैंने आज तक जान बूझ कर झूठ नहीं बोला और फिर यह कहते हैं कि मैं उम्मीद रखता हूँ कि अल्लाह आइन्दा भी जब तक ज़िंदा हूँ मुझे झूट से महफ़ूज़ रखेगा।

फिर कहते हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह वह्य नाज़िल की और अल्लाह नबी पर और मुहाजिरीन और अन्सार पर तौबा क़बूल करते हुए झुका जिन्होंने तंगी के वक़्त उस की पैरवी की थी, बाद उस के कि क़रीब था कि उनमें से एक पक्ष के दिल टेढ़े हो जाते। फिर भी उसने उनकी तौबा क़बूल की यक़ीनन वहाँ के लिए बहुत ही मेहरबान और बार-बार रहम करने वाला है

बहरहाल कहते हैं कि अल्लाह की क़सम इस के बाद कि अल्लाह ने मुझे इस्लाम की हिदायत दी ,कभी भी उसने कोई इनाम मेरे नज़दीक इस से बढ़कर नहीं किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच सच वर्णन कर दिया। कहते हैं कि शुक्र है कि मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से झूठ नहीं बोला वर्ना मैं हलाक हो जाता जैसा कि वे लोग हलाक हो गए जिन्होंने झूठ बोला था। फिर कहते हैं कि अल्लाह तआला ने झूठ बोलने वालों के बारे में निहायत ही नफ़रत भरे शब्द इस्तिमाल किए हैं जो उसने किसी के लिए इस्तिमाल किए हूँ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब तुम उनकी तरफ़ लौटोगे वे तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाएँगे। अल्लाह इन बुरे वादा वाले लोगों से कभी ख़ुश नहीं होगा। हज़रत कअब रज़ि कहते थे कि हम तीनों का फ़ैसला उन लोगों के फ़ैसले से ज़्यादा देरी वाला रखा गया जिनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहाना क़बूल किया था। जब उन्होंने आप के सामने क़समें खाईं और आप ने उनसे बैअत ली और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की थी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे फ़ैसले को मुल्तवी कर दिया यहां तक कि अल्लाह ने इस के बारे में फ़ैसला फ़रमाया। अत: वह यही बात है कि अल्लाह ने फ़रमाया है कि وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا (अत्तौब: 118)

कहते हैं कि यह जंग से हमारा पीछे रहना नहीं। इस का यह मतलब नहीं है कि ये तीन जो पीछे रह गए थे। इस से मुराद हमारा जंग से पीछे रहना नहीं था बल्कि मुराद यह है कि अल्लाह के फ़ैसले से हमें उन लोगों से पीछे रखा गया था। इस से यह मुराद है जिन्हों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कसमें खाई थीं अर्थात हम इन क़समें खाने वालों से और झूठ बोलने वालों से अलग थे। ये उस का मतलब है ना यह कि जंग से पीछे रह गए। बहरहाल कहते हैं कि यह जंग से हमारा पीछे रहना नहीं था बल्कि अल्लाह के फ़ैसले से हमें उन लोगों से पीछे रखना मुराद है कि जिन्हों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कसमें खाई थीं और आप के पास माज़रतें की थीं और आप ने उनकी माज़रत क़बूल कर थी।

(सही बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी कअब बिन मालिक हदीस 4418)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 153 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी पब्लीकेशन्ज़ कराची)

हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि अमीर मुआवीया के दौरे हकूमत में फ़ौत हुए थे।

(अलअसाब: फ़ी तमीईज़िस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 428 हिलालु बिन उमय्यह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2005 ई)

जंग तबूक के बारे में एक और मुख़्तसर नोट भी है वह भी पढ़ देता हूँ। पहले बता भी चुका हूँ एक बार फिर दोबारा वर्णन कर देता हूँ कि तबूक मदीना से शाम

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

के इस मुख्य मार्ग पर स्थित है जो तिजारती क़ाफ़िलों की आम गुज़रने के स्थान पर थी और यह वादी अलक़रा और शाम के मध्य एक शहर है। इसे वादी एक: का शहर भी कहा गया है जिनकी तरफ़ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम मबऊस हुए थे। हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम मदयन के रहने वाले थे और आप मदयन के साथ इस एक: की तरफ़ भी मबऊस हुए थे। (मोअज्जमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 17 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)और मदीना से इस की दूरी कम से कम पौने चार-सौ मील है। जंग तबूक के अन्य नाम भी हैं इस को गज़वतुल उसर या जैशुल उसरह अर्थात जंगी वाली जंग और तंगी वाला लश्कर ग़ज़वतुल फैज़ह भी कहते हैं वह जंग जो मुनाफ़क़ीन को ज़लील तथा रुस्वा करने वाली थी।

(शरह अल-अलामतुज़रकानी मवाहेबुर्रहमानी भाग 4पृष्ठ 66 सुम्मा ग़ज़व तबूक, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1996 ई)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुलह हुदैबिया के बाद सबसे पहला तब्लीग़ी ख़त केसर रूमा को लिखा और इस को लिख कर उस वक़्त बुसरा का जो ईसाई गवर्नर हारिस बिन अबू शिम्र ग़स्सानी था, को यह ख़त भिजवाया। अत: जब उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पैग़ाम पहुंचा तो उसने शत्रुता का इज़हार किया और मदीना पर हमला की धमकी दी जिसकी वजह से मदीना के लोगों को एक अर्से तक यह आशा रही कि वह किसी वक़्त मदीना पर हमला करेगा

(उद्धरित हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 802)

(उद्धरित सही अल-बुख़ारी किताबुन्निकाह हदीस 4913)

इस जंग की तैयारी का कारण यह बात बनी कि शाम के निबती क़बीला के लोग जो तेल की तिजारत के लिए मदीना सफ़र करते थे उनके द्वारा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह ख़बर मिली कि केसर रुम का एक लश्कर क़ैसर के साथ मुल्क शाम में इकट्ठा हुआ है और एक दूसरी रिवायत के अनुसार अरब के ईसाईयों ने क़ैसर की तरफ़ लिखा कि यह शख़्स जो नबुव्वत का दावा करता है यह हलाक हो गया है (नऊज़-बिल्लाह तो मुस्लमानों को क़हत ने आ लिया है जिसके नतीजे में उनके जानवर हलाक हो गए हैं। इस पर क़ैसर ने एक अज़ीम सिपहसालार की क़ियादत में कई क़बीले, के जंगजूओं पर आधारित चालीस हज़ार सिपाहियों का एक ख़तरनाक लश्कर तैयार किया जो बकाएल (जो मुल्क शाम का एक स्थान है) के स्थान पर जमा हुआ। इस ख़बर में बहरहाल किसी किस्म की सदाक़त नहीं थी लेकिन यह ख़बर जो थी वह जंग की तैयारी का कारण बन गई। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब यह ख़बर मिली उस वक़्त लोगों में ताक़त नहीं थी फिर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों में कूच का ऐलान करवाया और उन्हें इस जगह के बारे में आगाह कर दिया जिस तरफ़ सफ़र करना था ताकि वे उस के लिए तैयारी कर सकें। यह शरह अल्लामा जरक़ानी में है।

(शरह अल्लाम अली अलमवाहेबुल्लदीन भाग 4 पृष्ठ 67-68 सुम्मा ग़ज़व तबूक, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1996 ई)

(लुग़ात अलहदीस भाग 1 पृष्ठ 174)

सहाबा की कुर्बानी और मुनाफ़िक़ों की साज़िशें भी इस में ज़ाहिर हुईं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जंग के लिए तैयारी का ऐलान फ़रमाया ही था कि मदीना में एक गहमा गहमी शुरू हो गई। जो सहाबा संसाधन रखते थे वे अपने सामर्थ्य की चरम हदों तक क़ुर्बानियां पेश कर रहे थे। जो मजबूर थे उनका जोश तथा जज़बा इस क़दर तीव्र पर था कि सैंकड़ों मील के सफ़र के लिए पैदल चलने पर तत्पर थे और तैयार थे। इस मुहिम में सुविधाएं पेश करने के लिए कोई घर की तरफ़ भाग रहा था तो कोई अपने सामान इकट्ठे कर रहा था और अपने आका के हुज़ूर ज़्यादा से ज़्यादा देने के लिए कोशिश कर रहा था। बहरहाल कोई अपने मकानों की तलाशी ले रहा था कि कुछ मिले तो में इस के द्वारा जंग में शामिल हों और पैदल चलने के लिए भी लोग तैयार थे बल्कि कुछ लोगों के पास तो जूतियां नहीं थीं। ऐसे लोग जो थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और उन्होंने कहा कि हमें पैदल चलने के लिए जूतियां ही मिल जाएं तो हम पैदल चलने को भी तैयार हैं। अगर हमारे नंगे पैर हैं तो हमें बिलकुल नहीं कि हमारे पैर ज़ख़्मी हो जाऐंगे और हम पहुंच नहीं सकेंगे। इस वक़्त वो हालत थी कि उनको वह भी मुहय्या नहीं हो सकती थीं। बहरहाल हर एक अपनी अपनी जगह अपनी जान के नज़राने पेश करने के लिए तैयार था। हज़रत उम्र रज़ि को ख़्याल था कि आपके घर में काफ़ी माल है। अत: उन्होंने सोचा कि हज़रत अबू बकर रज़ि से सबक़त ले जाने का आज मौक़ा है तो आप ने अपना आधा माल ला कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रख दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने घर वालों के लिए किया छोड़कर आए हो। हज़रत उमर रज़ि ने निवेदन किया कि आधा माल लाया हूँ और आधा छोड़ आया हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ि ने अपना सारा सामान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुज़ूर पेश कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब पूछा कि अपने घर के लिए किया छोड़ के आए हो तो उन्होंने निवेदन किया कि घर वालों के लिए अल्लाह और इस का रसूल छोड़ आया हूँ। हज़रत उमर रज़ि ने इस वक़्त हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो पर रशक करते हुए कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं हज़रत अबू बकर रज़ि से किसी चीज़ में कभी प्राथमिकता नहीं ले जा सकता।

(सुनन अत्तिर्मज़ी किताबुल मनाकिब हदीस 3675)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस घटना का वर्णन किया है। आप फरमाते हैं कि

''एक बार हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रुपया की ज़रूरत बतलाई तो हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो घर का सारा सामान लेकर हाज़िर हो गए। आप ने पूछा अबूबकर घर में क्या छोड़ आए तो जवाब में कहा "अल्लाह और इस का रसूल।" अल्लाह और रसूल का नाम छोड़ आया हूँ। हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो आधा ले कर आए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा उमर! घर में क्या छोड़ आए? तो जवाब दिया कि आधा। हज़रत मसीह मौऊद फ़रमाते हैं कि इस पर "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबूबकर तथा उम्र के कामों में जो अन्तर है वही उनके मुरातिब में फ़र्क़ है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 95)

हज़रत अबू बकर रज़ि ने जंग तबूक के अवसर पर अपना जो सारा माल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश किया था उस की मालियत इस मौक़ा पर चार हज़ार दिरहम थी

(शरह अलअलामतुल जरकानी अलमवाहेबुल लदुनिया भाग 4 पृष्ठ 69 ग़ज़व तबूक, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1996 ई)

हज़रत उसमान रज़ि ने भी ऊंटों और घोड़ों और नक़द रूपए की क़ुर्बानी पेश की थी। इस क़ुर्बानी की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर खड़े हो कर फ़रमाया था कि इस कार्य के बाद अब उसमान रज़ि के किसी अमल पर कोई पूछताछ नहीं। एक दूसरी रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज के दिन के बाद उसमान रज़ि जो भी अमल करेगा वह उसे हानि नहीं पहुंचाएगा। यह बात आप ने दो बार फ़रमाई।

(सुनन अत्तिरमज़ी किताबुल मनाकिब हदीस 3700-3701)

(शरह अलअलामतुल जरकानी अलमवाहेबुल लदुनिया भाग 4 पृष्ठ 68-69 ग़ज़व तबूक, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1996 ई)

हज़रत अबू अकील रज़ि एक सहाबी थे उनके पास जंग में देने के लिए कुछ नहीं था तो उन्होंने यह तरकीब सोची कि एक जगह रात को मज़दूरी पर काम कर के, मज़दूरी पर काम कर के खेत को पानी लगाने का मामला एक शख़्स से तय किया और सारी रात रस्सी खींच खींच कर कुँवें से पानी निकालते रहे और खेत को सेराब करते रहे। इस के बदले में उनको दो साअ आर्थात लगभग चार पाँच किलो खजूरें मिलीं। उन्होंने आधी इस में से अपने बीवी बच्चों के लिए दे दीं और आधी लेकर अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बानी करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए।

हज़रत अब्दुर्रहिमान बिन औफ़ रज़ि ने इस मौक़ा पर अपना आधा माल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया जिसकी मालियत

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 16 January 2020 Issue No. 3

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

चार हज़ार चार-सौ दिरहम थी। जब हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि ने सौ वसक, (एक वसक में साठ साअ होते हैं और एक साअ अढ़ाई किलो का, कुछ कम अढ़ाई सैर का होता है खजूरें पेश कीं तो मुनाफ़िक़ों ने यह इल्ज़ाम लगाया कि यह दिखावा है। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत भी नाज़िल फ़रमाई। इस बारे में यह भी बता दूं कि तक़रीबन ये खजूरें जो हज़रत आसिम रज़ि ने पेश कीं चौदह हज़ार किलो या चौदह टन बनती हैं तो उसी पर मुनाफ़िक़ों ने कहा कि दिखावा है। यहां यह भी वज़ाहत कर दूं पिछले ख़ुत्बे में मैं ने ग़लती से एक calculation मैं छः सौ किलो खजूर का कहा था वह छः सौ नहीं छः हज़ार किलो थी। बहरहाल जब मुनाफ़िक़ों ने यह इल्ज़ाम लगाया कि यह दिखावा है तो अल्लाह तआला ने सूरत तौबः में यह नाज़िल फ़रमाया

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

(अत्तौब 79)

कि वे लोग जो मोमिनों में से दिली शौक़ से नेकी करने वालों पर सदक़ात के बारे में आरोप लगाते हैं और उन लोगों पर भी जो अपनी मेहनत के सिवा अपने पास कुछ नहीं पाते। अत: वे उनसे उपहास करते हैं अल्लाह उनके उपहास का जवाब देगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब निर्धारित है।

(असदुलग़ाबः फ़ी मारफ़तुल सहाबः भाग 6 पृष्ठ 215 अबू अक़ील, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान)

(लुगात अलहदीस भाग 4 पृष्ठ 487 "वसक"। लुग़ातुल हदीस भाग 2 पृष्ठ 648 "साअ"

यह उन मुनाफ़िक़ों के लिए या उन लोगों के लिए है जो ऐसे इल्ज़ाम लगाने वाले हैं। बहरहाल यह हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि के अन्तर्गत में यह बात आई , वर्णन हुई। अभी हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि के ज़िक्र का कुछ और भी हिस्सा है जो इंशा अल्लाह तआला भविष्य में वर्णन होगा।

इस समय वक़्फ़ नौ विभाग की तरफ़ से एक ऐलान भी है कि उन्होंने वक़्फ़ नौ की waqfenauintl.org के नाम से एक वेबसाइट बनाई है जिसका आज इंशा अल्लाह आरम्भ भी होगा। इस वेबसाइट पर माता पिता अपने होने वाले बच्चे को वक़्फ़ नौ में शामिल करने के लिए लिखे गए पत्रों के बारे में और उनके उत्तर के बारे में सम्बन्धित विभाग से सीधा सम्पर्क कर के रहनुमाई ले सकते हैं। फिर माता पिता वाकफ़ीन नौ की तालीम तथा तर्बीयत के लिए जो मेरी हिदायते हैं और रहनुमाई है इस के बारे में मालूमात ले सकते हैं। फिर वेबसाइट पर सिलसिला के ख़ुलफ़ाओं के ख़ुत्बों और ख़िताबों और वाकफ़ीन नौ का निसाब और उनका जो रिसाला है। लड़कों का "इस्माईल" और लड़कियों का "मर्यम" उनके मैगज़ीन के शुमारे भी इस में देख सकते हैं। फिर वाकफ़ीन नौ को उस पर कैरियर प्लैनिंग की रहनुमाई भी मिल सकती है। फिर वेबसाइट पर तजदीद वक़्फ़ और शोबा वक़्फ़ नौ के साथ अपने सम्पर्क को क़ायम रखने और उप टू डेट करने की सविधा भी मौजूद है। फिर वाकफ़ीन नौ को जमाअत की ज़रूरतों के हवाले से मालूमात भी मिल सकती हैं और यह कि वह किस तरह की शिक्षा हासिल करें ताकि जमाअत की अहसन रंग में ख़िदमत कर सकें। फिर सेक्रट्रियान वक़्फ़ नौ और इंतिज़ामीया की रहनुमाई के लिए मालूमात और रिपोर्ट फ़ार्म भी उस पर मौजूद होंगे। फिर वाकफ़ीन नौ के कुछ सवाल जो विभिन्न समयों में उन्होंने मेरी क्लासों इत्यादि में किए हैं उनके वीडीयो किलिप्स भी मौजूद हैं। फिर तहरीक वक़्फ़ नौ का परिचय और शोबा वक़्फ़ नौ के साथ स्थायी सम्पर्क में रहने के लिए मालूमात भी मौजूद हैं। फिर विभिन्न देशों में वक़्फ़ नौ के हवाले से होने वाले प्रोग्रामों की रिपोर्ट और तस्वीरी झलकियाँ भी इस में उपलब्ध होंगी। बहरहाल यह वेबसाइट आज से शुरू होगी इंशा अल्लाह। और जो वाक़फ़ीन नौ हैं और जो वाक़फ़ीन नौ के माता पिता हैं वे ज़रूर इस से लाभ उठाएं।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 24 दिसम्बर 2019 पृष्ठ 5 से 09)

☆ ☆ ☆

एक नसहीत वाली तहरीर
आसानियां बाँटना किसे कहते हैं

आज वह अपनी समस्त व्यस्तता को पीछे छोड़ कर दरवेश के पास पहुंचा था, जब उस की बारी आई तो उसने दोनों हाथों से हाथ मिलाया और दरवेश से दुआ करने को कहा, दरवेश ने नौजवान के कांधे पर हाथ रखा और बड़े जज़बा से दुआ दी "अल्लाह तआला तुझे आसानियां बांटने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।"

दुआ लेने वाले ने हैरत से कहा " हज़रत अलहमदो लिल्लाह हम माल पाक करने के लिए हर साल वक़्त पर ज़कात देते हैं, बलाओं को टालने के लिए ज़रूरत अनुसार सदक़ा भी देते हैं, उस के इलावा मुलाज़मीन की जरूरतों का भी ख़्याल रखते हैं, अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से हम तो काफ़ी आसानियां बांट चुके हैं।

दरवेश थोड़ा सा मुस्कुराया और बड़े धीमे और मीठे लहजे में बोला"मेरे बच्चे सांस, पैसे, खाना ये सब तो रिज़्क़ की विभिन्न किस्में हैं और याद रखो "राज़िक़ और अल--रज़्ज़ाक़" सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला की ज़ात है, तुम या कोई और इन्सान या कोई और मख़लूक़ नहीं। तुम जो कर रहे हो, अगर ये सब करना छोड़ भी दो तो अल्लाह तआला की ज़ात यह सब केवल एक क्षण में सब को प्रदान कर सकती है, अगर तुम यह कर रहे हो तो अपने सर्व श्रेष्ठ मख़लूक़ होने की ज़िम्मेदारी अदा कर रहे हो।"

दरवेश ने नर्मी से इस का हाथ अपने दोनों हाथों में लिया और फिर बोला''मेरे बच्चे आओ मैं तुम्हें समझाऊँ कि आसानियां बाँटना किसे कहते हैं

- कभी किसी उदास और मायूस इन्सान के कंधे पर हाथ रखकर, माथे पर कोई शिकन लाए बग़ैर एक घंटा उस की लंबी और बे-मक़्सद बात सुनना आसानी है।
- अपनी ज़मानत पर किसी बीवी की जवान बेटी के रिश्ते के लिए संजीदगी से भाग दौड़ करना आसानी है।
- सुबह दफ़्तर जाते हुए अपने बच्चों के साथ मुहल्ले के किसी यतीम बच्चे को स्कूल ले जाने की ज़िम्मेदारी लेना यह आसानी है।
- अगर तुम किसी घर के दामाद या बहनोई हो तो ख़ुद को ससुराल में ख़ास और उत्तम ना समझना यह भी आसानी है।
- ग़ुस्से में बिफरे किसी आदमी की कड़वी और ग़लत बात को नर्मी से बर्दाश्त करना यह भी आसानी है
- चाय के खोखे वाले को ओए कह कर बुलाने की बजाय भाई या बेटा कह कर बुलाना भी आसानी है
- तुम्हारा अपने दफ़्तर, मार्कीट या फ़ैक्ट्री के चौकीदार और कम आय वाले मुला-ज़मीन को छोटा ना समझना, उन्हें सलाम में पहल करना, दोस्तों की तरह गर्म-जोशी से मिलना, कुछ देर रुक कर उनसे उनके बच्चों का हाल पूछना यह भी आसानी है।
- हस्पताल में अपने मरीज़ के बराबर वाले बिस्तर के अन्जान मरीज़ के पास बैठ कर उस का हाल पूछना और उसे तसल्ली देना यह भी आसानी है
- ट्रैफ़िक इशारे पर तुम्हारी गाड़ी के आगे खड़े शख़्स को हॉर्न ना देना जिसकी मोटर साईकल बंद हो गई हो, समझो तो यह भी आसानी है।

दरवेश ने हैरत में डूबे नौजवान के सर पर शफ़क़त से हाथ फेरा और सिलसिला कलाम जारी रुकेते हुए दोबारा ध्यान करते हुए कहा "बेटा जी तुम आसानी फैलाने का काम गैर से क्यों नहीं शुरू करते? आज वापस जा कर बाहर दरवाज़े की घंटी सिर्फ एक बार देकर दरवाज़े खुलने तक इंतज़ार करना,आज से बाप की डाँट ऐसे सुनना जैसे मोबाइल पर गाने सुनते हो, आज से माँ के पहली आवाज़ पर जहां कहीं हो फ़ौरन उनके पास पहुंच जाया करना, अब उन्हें तुम्हें दूसरी आवाज़ देने की नौबत ना आए,बहन की ज़रूरत उस के तक़ाज़ा और शिकायत से पहले पूरी कर दिया करो,आइंदे से घर में किसी की ग़लती पर सब के सामने उस को डाँट डपट मत करना, किसी की बात बुरी लगे तो सुधार के नाम पर लोगों में इस बुराई को बढ़ा चढ़ा कर मत बताना, किसी की बुराई को छुपाना अल्लाह को पसंद है क्योंकि वह ख़ुद सबसे बड़ा बुराई छुपाने वाला है

सालन अच्छा ना लगे तो दस्तर-ख़्वान पर शिकायत ना करना,कभी कपड़े ठीक इस्त्री ना हूँ तो ख़ुद इस्त्री दरुस्त कर लेना।

मेरे बेटे एक बात याद रखना ज़िन्दगी तुम्हारी मुहताज नहीं, तुम ज़िन्दगी के मुहताज हो, मंज़िल की फ़िक्र छोड़ो, अपना और दूसरों का रास्ता आसान बनाओ, इंशा अल्लाह तआला मंज़िल ख़ुद ही मिल जाएगी।

आएं सच्चे दिल से दुआ करें कि अल्लाह तआला हम सबको आसानियां बांटने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad